चन्दामामा
जुलाई १९६३
60
nP

डाबर
(डा. एस. के. बर्मन)
प्राइवेट लि०
कलकत्ता
बालामृत
(डाबर-बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

चन्दामामा

जुलाई १९६३

SUNLIGHT
SOAP

आओ हिल-मिल
खेलें खेल!

मोहक मनोरंजन

Sharp
JHANKAR

हायाकावा इलेक्ट्रिक कंपनी लि.
जापान की तकनीकी
देखरेख में निर्मित

मॉडल बी एक्स एल्-३३८ (पोर्टेबल सैट)
८-ट्रान्ज़िस्टर ३-बैंड टोन कन्ट्रोल
रु. २६५
उत्पादन ड्यूटी सहित (टैक्स अतिरिक्त)
कैरिंग केस का मूल्य अतिरिक्त

मॉडल यू बी-१४३
(टेबल मॉडल) ५-ट्यूब ३-बैंड
विशेषतया निर्मित सुरक्षात्मक सर्किट
रु. २१०
उत्पादन ड्यूटी सहित (टैक्स अतिरिक्त)

मॉडल बी ट्रेड-५२०
(पोर्टेबल सैट) ९-ट्रान्ज़िस्टर ५-बैंड
सूक्ष्म ट्यूनिंग व रेक्टिफायर की विशेषता
रु. ४१५
उत्पादन ड्यूटी सहित (टैक्स अतिरिक्त)
कैरिंग केस का मूल्य अतिरिक्त

ट्रान्ज़िस्टर रेडियो के सर्वप्रथम निर्माता
रेडियो विभाग, इन्डियन प्लास्टिक्स लि.,
बम्बई ६७

आपके नज़दीक के "शार्प झंकार" विक्रेता के पास दर्याफ्त कीजिए।

विभागीय वितरक :

महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात :—इन्डियन ट्रेडिंग्स लिमिटेड
लोटस हाउस, ३३-ए, मरीन लाइन्स, बम्बई-१

उत्तर प्रदेश, पंजाब, कश्मीर, } पार्को, १६-बी, कनाट प्लेस, न्यू देहली.
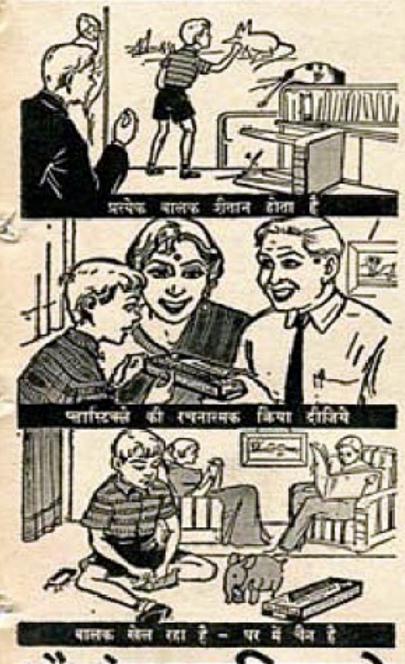
जुलाई १९६३

मैं "चन्दामामा" करीब आठ सालों
रहा हूँ। मगर उस तरह की पत्रिका मै
नहीं देखी। अगर आप इसमें "वर्ग
प्रतियोगिता" स्तम्भ चालू कर दें तो
में चार चान्द लग जायेंगे। मई अंक में "
घाटी" "गन्धर्व सम्राट की लड़की" "
हिसाब" "हेरा" "किष्किंधाकांड"
पसन्द आयी।

बल्देव सिंह, कि

मैं सिर्फ छः महीनो से ही "चन्द
पढ़ता आ रहा हूँ। कहानियाँ बड़ी ही
और चित्र बहुत ही लुभावने होते है। मैं
हूँ। इसलिये हमारे घर में "चन्दामामा
कोई भी नहीं पढ़ सकता है। कृपया
"चन्दामामा" को बंगला भाषा में भी
करें, तो बहुत अच्छा होगा।

रवीन्द्र नाथ सरकार, उ

बड़े हर्ष के साथ कह रहा हूँ कि
मासिक पत्रिका "चन्दामामा" मैं त
साथी दो साल से पढ़ रहे हैं। इस पत्रि
हमने बहुत पसन्द किया है और इनमें धा
कहानियाँ मुझे अत्यन्त पसन्द आई है।

अत: मेरा यह अनुरोध है कि आप "चन्द
को साप्ताहिक न सही तो पाक्षिक अव
दिजिये।

केदार नारायण खत्री, श्री

आन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय नृत्य कलाकार
कमला लक्ष्मण
की
प्रशंसा पात्र
फेशन
नमूना
इन
के लिए
रंग रंग के
सभ्यता
श्री
वेन्कटेश्वर
सिल्क साड़ियाँ
श्री वेन्कटेश्वर
सिल्क पॅलेस
स्त्रियों के सुन्दर वस्त्रों के लिए
मनोहर स्थल
१८४/१ चिकपेट, बेंगलूर-२.
फोन :
तार : "ROOPMANDIR"

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

अब ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया है। फिर अध्ययन का समय प्रारम्भ हो गया है।

कुछ भी परिस्थिति हो, संकट हो, अथवा न हो, प्रति विद्यार्थी, प्रति किशोर का यह कर्तव्य है, कि वह अपनी शिक्षा की ओर पूर्ण ध्यान दे। चूँकि शिक्षित युवक समाज ही एक सतर्क, सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। देश को ऐसे समाज की आवश्यकता है।

आजकल देश के प्रति हमारा उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है। हमें पहिले से अधिक बलवान बनना होगा। सजग रहना होगा।

वर्ष १४ जुलाई १९६३ अंक ११

भारत का इतिहास

दिल्ली के बुजुर्गों को खिल्जी सुल्तान, जलालुद्दीन फिरोज़ नहीं जँचा। जब वह गद्दी पर आया था, तब उसकी उम्र ७० वर्ष की थी। उनको यह भी पसन्द न था, कि वह तुरुश जाति का न था। उसकी शान्तिप्रियता और उदारता की कभी कभी हद हो जाती। उसे खून खराबी भी बिल्कुल नापसन्द थी।

जब १२९२ में मंगोल गिरोहों ने भारत पर हमला किया, तो जलालुद्दीन ने उनको हरा दिया। पराजित सेना को उसने अपने देश जाने दिया। जब कुछ मंगोलों ने इस्लाम स्वीकार करके दिल्ली के आस पास बस जाना चाहा तो सुल्तान उस के लिए भी मान गया।

जलालुद्दीन के भाई के एक लड़का था, जिसका नाम अलाउद्दीन खिल्जी था। जलालुद्दीन ने उसे पाला। यह देख कि उसका पिता न था उसको लाड़ प्यार दिया। फिर उसने उसको अपना दामाद भी बना लिया। कर (अलहाबाद) भी उसने ईनाम में दिया। कर जब से उसके हाथ में आया तब से उसकी धन की इच्छा और पद की आंकाक्षा बढ़ने लगी। इसने १२९२ में माल्वा पर हमला किया। भीलसा नगर को वश में किया और इसके बदले उसने अयोध्या ईनाम में पाया।

भीलसा में ही अलाउद्दीन के सुनने में आया कि दक्षिण में देवगिरि अत्यन्त सम्पन्न था। रामचन्द्रदेव नाम का यादव राजा देवगिरि का राजा था। उसको हराकर देवगिरि को लूटने की अलाउद्दीन की इच्छा हुई। अपने ससुर को बिना बताये

हजार घुड़सवारों को लेकर, विन्ध्या पार करके, देवगिरि में पहुँचा।

रामचन्द्रदेव इस युद्ध के लिए तैयार न था। यही नहीं, देवगिरि सेना का बहुत-सा भाग, उसका लड़का शंकरदेव दक्षिण की ओर ले गया था। फिर भी रामचन्द्रदेव ने यथाशक्ति युद्ध किया। मगर वह हार गया। शत्रुओं को काफी हरजाना देने के लिए भी मान गया। अलाउद्दीन जब वापिस जा रहा था, तो शंकरदेवने अपनी सेना के साथ उस पर हमला किया। उसने पिता की बात न मानी। आखिर वह भी लड़ाई में हारा। उसने आस-पास के राज्यों से मदद भी माँगी पर कोई मदद करने न आया। इसलिए शत्रु को और अधिक हरजाना देकर, उसने सन्धि कर ली।

अलाउद्दीन के इस साहसिक कार्य के कारण, दक्षिणी राज्यों की सम्पदा को लूटने और विन्ध्या के नीचे दिल्ली की सल्तनत बढ़ाने की नींव पड़ी। जो धन इस तरह लूटा गया था, अलाउद्दीन ने अपने ससुर को तो पहुँचने ही न दिया बल्कि अब उसकी नजर दिल्ली के सिंहासन पर भी थी।

उसने अपने ससुर हो कर आने का निमन्त्रण दिया। जलालुद्दीन के सिपाहियों में से एक राजद्रोही ने इस के लिए प्रेरित भी किया। फिर जलालुद्दीन को अलाउद्दीन पर प्रेम भी था। इसलिए उसने अपने हितैषियों की बात न सुनी। अपने साथ उसने अपने अंगरक्षक भी न लिये, वह नाव में, अलाउद्दीन से मिलने गया और अलाउद्दीन की राज्याकांक्षा का शिकार हो गया। १९ जुलाई, १२९६ में, अलाउद्दीन को उसके अनुचरों ने सुल्तान घोषित कर दिया।

जलालुद्दीन की पत्नी मल्लिका जहाँ बड़ी चालाक थी। उसका बड़ा लड़का अर्दली खान उसकी चालें न सहकर दूर मुल्तान में रह रहा था। यह जानते ही कि उसका पति मर गया था मल्लिका जहाँ ने अपने छोटे लड़के रुक्नुद्दीन इब्राहीम को दिल्ली का सुल्तान बनाया। यह जान अलाउद्दीन, वर्षा के बावजूद दिल्ली के लिए निकल पड़ा। इब्राहीम, अलाउद्दीन का मुकाबला न कर सका। वह अपनी माँ के साथ मुल्तान भाग गया। अलाउद्दीन ने जो धन दक्षिण में लूटा था उसको दे दाकर, उसने दिल्ली के प्रमुखों को अपनी तरफ कर लिया। ३ ओक्टोबर १२९६ दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

परन्तु अलाउद्दीन सुखपूर्वक राज्य न कर सका। कुछ तुर्कों ने बागवत कर दी। राजपुताना, माल्वा, गुजरात के शासकों ने उसको स्वीकार न किया। मंगोलों से खतरा था ही। परन्तु इन सब कठिनाइयों का उसने अच्छी तरह सामना किया। उसके गद्दी पर आते ही, मंगोलों ने हमला किया, पर वे हरा दिये गये। अगले साल फिर हमला किया, फिर वे हरा दिये गये और हजारों की संख्या में कैदी भी बना लिये गये। १२९९ में फिर उन्होंने हमला किया। इस बार वे लूटना नहीं, जीतना चाहते थे। उन्होंने इस बार न गाँव लूटे न किलों पर ही कब्जा किया। सीधे वे दिल्ली की ओर गये। युद्ध हुआ। आखिर उनको जाना पड़ा। १३०४ में, १३०७ में फिर उन्होंने हमला दिया, वे फिर हरा दिये गये। फिर उन्होंने अलाउद्दीन के काल में कभी हमला न किया।
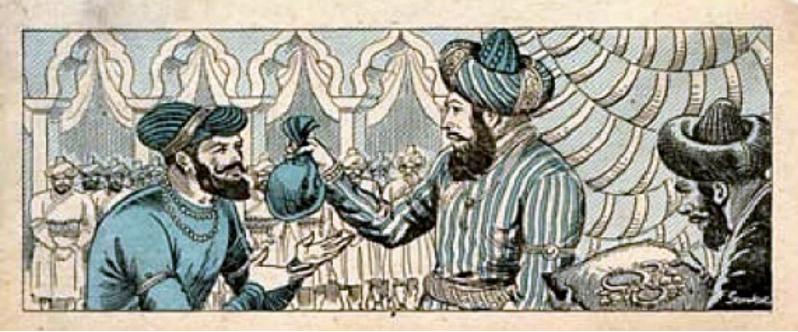
दास्य-विमुक्ति

शैलशिखर था शोभित हिममय
गरुड़ उसीपर बैठा जाकर,
और मिटायी भूख वहीं पर
गज-कच्छप को उसने खाकर।

फिर वह उड़ा गगन में ऊँचे
रक्तिम मेघ समान,
याकि अग्नि के महापुंज-सा
छूटे कोई यान!

छूट गयी धरती नीचे ही
ओझल हुए पहाड़,
आंधी-सा ही जा पहुँचा वह
मेघों के उस पार।

नक्षत्रों का देश आ गया
जलते मौन सितारे,
गरुड़ उन्हींसे होकर गुजरा
अपने पंख पसारे।

स्वर्गलोक की ओर उसे जब
देखा बिलकुल बढ़ते,
नयी आपदा समझ इन्द्र ने
अपना रोष उगलते—

कहा सैन्य से—"मार भगाओ
अभी गरुड़ को जाकर!"
खुद भी ऐरावत पर चढ़ वह
निकला वज्र उठाकर।

देवदुंदुभी बजी युद्ध की
बढ़ी देवसेना मदमाती,
गरुड़ क्रुद्ध हो टूटा उनपर
जैसे आंधी आती।

सह न सकी देवों की सेना
पंखों की वह मार,
चोंच गरुड़ की बनी वज्र की
मानो थी तलवार।

बढ़ा गरुड़ फिर उधर जिधर वह
अमृतकलश रखा था,
किंतु वहाँ तो घेर कलश को
पावक दहक रहा था।

भीषण ज्वाला, धूम-घटाएँ
लपटें अति विकराल,
लगे झुलसने पंख गरुड़ के
लौटा वह तत्काल।

सुरगंगा के पास पहुँच कर
लिया चोंच में जल भर उसने,
और उसीसे प्रबल अग्नि को
बुझा दिया झटपट ही उसने।

बाधा लेकिन एक और थी
बुझी हुई थी यद्यपि आग,
बैठ कलश पर पहरा देते
थे दो-दो सिरवाले नाग।

जानी दुश्मन गरुड़ नाग का
देता कैसे छोड़,
टूट पड़ा उनपर वह तत्क्षण
दीं आँखें ही फोड़।

नागों का कर नाश गरुड़ ने
अमृतकलश उठाया।
और चला फिर देवलोक से
मन-ही-मन हरषाया।

उमड़ी आती सुरसेना थी
गरुड़ किये जाता संहार,
लाख-लाख सेना देवों की
गयी गरुड़ के आगे हार।

भागे दिग्गज-दिशापाल सब
वज्रायुध कुछ काम न आया,
छिपा इन्द्र भी जाकर भय से
धीर नहीं रण में रख पाया।

लाशों से पट गया रणस्थल
बही रक्त की धार,
त्राहि-त्राहि मच गयी वहाँ पर
चहुँदिशि हाहाकार।

शक्ति अपरिमित देख गरुड़ की
और भक्ति माता के ऊपर,
प्रमुदित होकर कहा विष्णु ने—
"वत्स, माँग मनचाहा ले वर !"

किया प्रणाम गरुड़ ने, बोला—
"करूँ आपकी सेवा नित्य,
यही चाहता आप बना लें
मुझको अपना भृत्य !"

"वत्स, ठीक है तुम ही अब से
होगे मेरे वाहन !"
ऐसा कहकर महाविष्णु तब
गये वहाँ से तत्क्षण।

सहसा इन्द्र वहाँ फिर आया
वज्र हाथ से छूटा,
किंतु गरुड़ को हुआ न कुछ भी
सिर्फ़ एक 'पर' टूटा।

टूटे पर की सुन्दरता से
वह 'सुपर्ण' कहलाया,
हार मान तब इन्द्रदेव ने
उसको मित्र बनाया।

कहा इन्द्र ने—"गरुड़ तुम्हारे
बल की नहीं मिसाल,
जन्म तुम्हें दे माता सचमुच
हुई होगी निहाल।

प्राप्त किया है अमृत तुमने
कहो, करोगे क्या तुम लेकर
कर न बैठना कहीं गज़ब तुम
इसे दुष्ट के कर में देकर !"

बोला इसपर गरुड़ कि "मुझको
इसकी है दरकार,
झेल रही दुख दासी बनकर
मेरी माँ मन मार।

दूँगा जब अमृत कद्रू को
माँ को मुक्ति मिलेगी,
दासी नहीं रहेगी जब वह
मन को शांति मिलेगी !"

कहा इन्द्र ने—"चलो ठीक है
मैं भी छिपकर आऊँगा,
काम तुम्हारा होते ही मैं
अमृत वापस लाऊँगा।"

सहमति जता गरुड़ जा पहुँचा
झट कद्रू के पास,
अमृत पाते ही कद्रू के
चमका मुख पर हास।

उठकर उसने तब विनता को
जाकर गले लगाया—
"दासी नहीं रही तुम अब तो
मैंने अमृत पाया।"

लगे देवता शंख बजाने
और गिराने फूल,
मुक्त हुई विनता बंधन से
मिटा हृदय का शूल।

साथ गरुड़ के विनता तब तो
गयी मुदित मन गेह,
उमड़ रहे थे सुख के आँसू
सुत का लखकर नेह।

इधर सभी पुत्रों को लेकर
कद्रू गयी नहाने,
अमृत को पीते फिर वे सब
खुद को अमर बनाने।

किन्तु नदी में उतरे जब वे
इन्द्र कलश ले गया उठाकर
लगी हाथ निज मलने दुख से
कद्रू अमृतकलश गँवाकर।

जहाँ कलश था रखा वहाँ थी
कुश की फैली घास,
लगे चाटने उसको ही तब
कद्रू-पुत्र हताश।

तीखी कुश की धार और थी
कोमल उनकी जीभ,
फटी बीच से दिखती तब से
ही नागों की जीभ!

★ [समाप्त]

[२४]
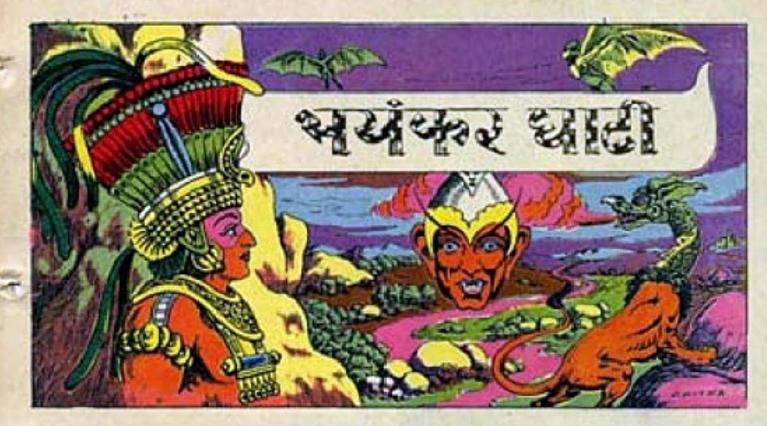
[केशव और उसके साथियों ने पहाड़ी गुफाओं में रहनेवाले जंगलियों को वचन दिया कि वे उनकी पंखवाले आदमियों से रक्षा करेंगे। फिर रात के समय उन पंखवाले मनुष्यों पर बाण भी छोड़ा, जो अपने देवता को बलि देने के लिए, दो गुफावासियों को ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे। बाद में–]

केशव आदि के बाण पेड़ की टहनियों पर लगे। यह देख पंखवाले मनुष्य ऐसे उठे, जैसे नीचे कूद रहे हों, फिर ऊपर ही रुककर चिल्लाये—"धोखा, धोखा, विश्वासघात" कलाबाजी खाकर, वे दूर के पेड़ों के पीछे चले गये।

"वे दुष्ट हमारे बाणों की पहुँच से दूर भाग गये हैं। अब क्या किया जाय!" केशव ने पूछा।

जयमल्ल ने पेड़ों के पीछे से कहा— "मेरा विश्वास है कि वे अधिक दूर उड़कर नहीं गये हैं। चलो, ढूँढें।" वे चल पड़े। इतने में दोनों गुहावासी जान बचाकर वहाँ भागे-भागे आये। उन्होंने कहा—"वे पंखवाले मनुष्य आकाश में उड़ गये हैं। पर उनसे भी अधिक दुष्ट श्वानकर्णी गिरोहवाले हमारी तरफ़ आ रहे हैं। हम बचकर नहीं भाग सकते।"

जयमल्ल बाण चढ़ाकर, उनकी ओर कुछ दूर गया। फिर रुककर उसने कहा—"तुम कौन हो, हम नहीं जानते। हम दोनों में कोई दुश्मनी नहीं है। तुम अपने रास्ते चले जाओ। यदि तुमने यह नहीं किया, तो हमारे हाथों तुम्हारी मौत होकर रहेगी।" केशव और जंगली गोमान्य बाण लेकर, उसकी बगल में खड़े हो गये। गुहावासी दोनों उनके पीछे खड़े हो गये।

मशालों की रोशनी में आगे चलनेवाले जंगली युवक ने हाथ का भाला ऊपर उठाकर कहा—"आप में और हम में कोई दुश्मनी नहीं है, यह तो सच है, तुम अपने रास्ते जाओ। हम तो सिर्फ आप के साथ के बिड़ाली गिरोह के लोगों को चाहते हैं। उन दोनों को सौंप दीजिये।"

"यह बिड़ाली कौन है? जयमल्ल और उसके साथ वालों को आश्चर्य हुआ। श्वानकर्णी, बीड़ाली—ये दोनों कौन हैं? इन दोनों के बीच में शत्रुता क्यों है?"

"हुजूर, बीड़ाली हमारा नेता है, आपने आज सबेरे ही उनको देखा था। हमारी तरह ये श्वानकर्णी गिरोह के लोग भी गुफ़ा में रहते हैं। हम में और उनमें

श्वानकर्णी का नाम सुनकर जयमल्ल ने चकित होकर कहा—"कौन है वह श्वानकर्णी? नाम बड़ा अद्भुत है। वे किस तरफ़ से हमला कर रहे हैं?"

गुहावासी अभी जवाब दे ही रहे थे कि जंगली गोमान्य ने एक तरफ़ मुड़कर कहा—"वह देखो मशालें। एक झुन्ड हमारी ओर चला आ रहा है।" कहकर, उसने धनुष पर बाण चढ़ाया। जयमल्ल और केशव ने भी उस तरफ़ देखा। गुहावासियों की तरफ़ के कुछ जंगली लोग भाला पकड़े, मशालें घुमाते चुपचाप उनकी ओर आ रहे थे।

बद्ध वैर है। यदि आपने हमें सौंप दिया, तो वे हमें मार देंगे।" गुहावासी ने काँपते हुए कहा।

"जयमल, हमने इनकी रक्षा करने का वचन दिया है। कुछ भी हो, हमें अपना वचन निभाना होगा।" केशव ने कहा। जंगली गोमान्य ने इतने में धनुष का बाण ज़ोर से खींचा।

जयमल ने उसको रोकते हुए कहा— "केशव, हम इतने डरपोक नहीं है कि दिये हुए वचन को रख न पायें। मगर देखो परिस्थिति कैसी है! हमारे विरोधी चालीस पचास लोग हैं। हम उन सबको मार कर नहीं जा सकते।"

"तो, तुम्हारा क्या ख्याल है!" केशव ने सन्देह करते हुए पूछा।

"सन्धि की बातें करके हम उनको आने से रोक देंगे। यदि यह सम्भव नहीं हुआ, तो जी तोड़कर लड़ेंगे।" कहते हुए जयमल ने दो कदम आगे रख कर पूछा—"जिसने बात की है, वह श्वानकर्णी ही है न! यदि हो तो भाला फेंककर सामने आये, यह मैं चाहता हूँ। यह देखो, मैं अपना धनुष बाण छोड़ता हूँ।"
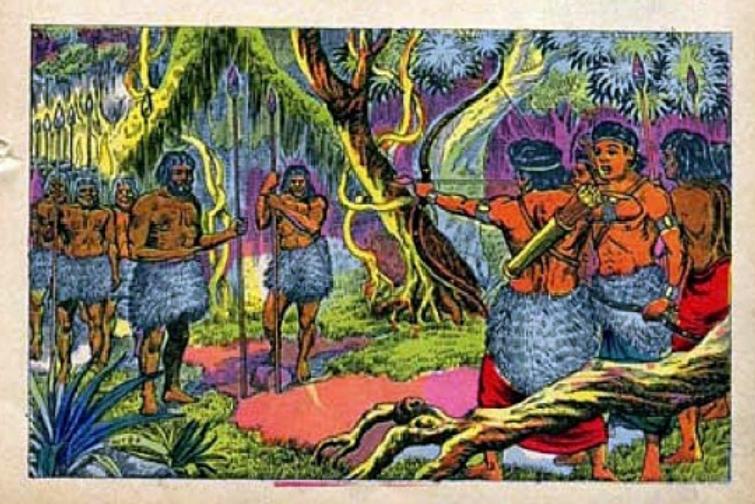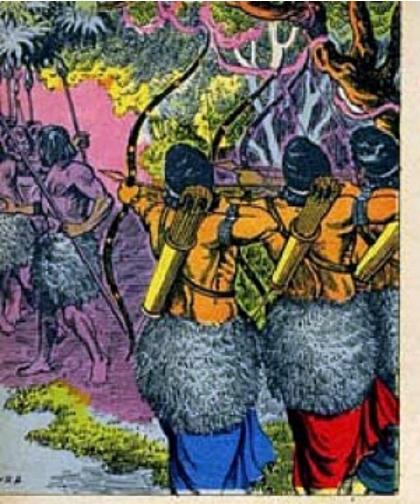
"श्वानकर्णी, हमारा नेता है। वह गुफ़ा के पास ही है। मैं उनका अनुचर हूँ। बिड़ाली गिरोह के उन दोनों लड़कों को छोड़कर, अपने रास्ते चले जाइये।" श्वानकर्णी के अनुचर ने कहा।

"यह कभी नहीं होगा। यदि तुम उनको पकड़ना चाहते हो, तो पहिले हमसे युद्ध करो। यदि तुम लड़ोगे, तो तुम में से एक नहीं बचेगा—तुम हमारे बाणों की चोट नहीं समझते, कुछ देर पहिले ही हमने पंखवाले आदमियों को डरा भगाया है।" कहकर जयमल ने धनुष पर बाण चढ़ाकर, केशव और जंगली गोमान्ना की ओर सिर हिलाया।

तीनों ने जब बाण चढ़ाकर आगे तीन चार कदम रखे, तो श्वानकर्णी के अनुचर ने पीछे मुड़कर अपने गिरोहवालों से कुछ कहा। तुरत सब मिलकर, उसको घेरकर बातें करने लगे।

"केशव, देखो यह खलबली! हम पर हमला किया जाय या न किया जाय! यह वे तय नहीं कर सके, इसलिए वे आपस में झगड़ रहे हैं। यही अच्छा मौका है, देखें क्या होता है!" कहते हुए जयमल ने जंगली मनुष्य की ओर मुड़कर कहा—"तुम में से जो मरना चाहें, वे आगे बढ़ें। बाकी सब पीछे हट जाओ। यदि तुम्हारा नेता श्वानकर्णी इस समय यहाँ होता, तो हमसे दोस्ती करने का ज़रूर यत्न करता।"

जयमल के यह कहने पर श्वानकर्णी के अनुचर ने साथवालों को ज़ोर से डपटा। जयमल की ओर दो कदम बढ़ाकर कहा—"आप चाहें, तो हमारे नेता से स्वयं बातचीत कर लीजिये। यदि डर न हो, तो हमारे साथ आइये, हम आपको उनकी गुफ़ा में ले जायेंगे।"

डर का नाम सुनते ही केशव को जोश आ गया। उसने धनुष के तागे को ज़ोर से खींचकर कहा—"चाहो, तो हम तुम्हारे नेता के पास ही नहीं, उसके बाप, दादा के पास भी जाने को तैयार हैं। चलो।"

जयमल्ल को लगा कि कहीं केशव कुछ गल्ती से तो नहीं कह गया था। पर अब उसे अपनी बात पर खड़ा होना था। यदि हम न गये, तो ये जंगली समझेंगे कि हम डर रहे हैं और तुरत हम पर हमला करेंगे।

जयमल्ल ने कुछ सोचते सोचते, पीछे खड़े गुहावासियों में से एक को, वहाँ से भागकर, जो कुछ हुआ था, वह अपने नेता बिड़ाली को बताने के लिए कहा। इतने में श्वानकर्णी के अनुचर ने ज़ोर से कहा—"आप जो कह रहे हैं, वह ही ठीक है। हमारे साथ आइये। हमारे नेता से बात कीजिये। वह भी आपको जाने के लिए ही कहेंगे। उन बिड़ाली गिरोह के आदमियों के लिए हमारा आपस में लड़ना व्यर्थ है।"

अच्छा, तो तुम आगे चढ़ो। जब तक हम तुम्हारी गुफा में न पहुँच जायें, तब तक हम दोनों में जो फासला है, वह बना रहे। यदि तुम में से किसी ने धोखा देने की कोशिश की, तो एक भी ज़िन्दा नहीं बचेगा।" जयमल्ल ने कहा।
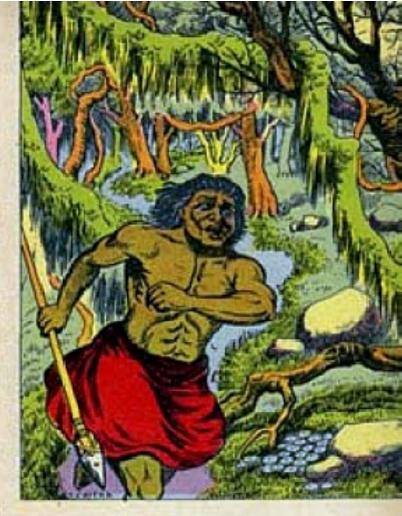
इसके बाद वे आगे बढ़े। आधा घंटा चलने के बाद वे ऊँची पहाड़ोंवाली जगह पहुँचे। तब पूर्व में सूर्य निकलना शुरु हो गया था। उस रोशनी में जयमल्ल और उसके साथियों को ऊँचे नीचे पहाड़ों की छोरों पर खड़े गुहावासी दिखाई दिये। वे सब उस प्रदेश के पास पहुँच रहे थे कि ऊपर से बड़े बड़े पत्थर लुढ़काये गये।

पत्थर केशव की ओर आने लगे। यह देखते ही सामने के श्वानकर्णी के सेवक शोर करते पहाड़ की ओर भागे।

आगे जाते हुए जयमल्ल ने रुककर कहा—"गोमान्न, दाहिनी तरफ़ जो पत्थर पर भालू का चमड़ा ओढ़े खड़ा है, वह ही श्वानकर्णी होगा! उस पर बाण से निशाना लगाओ। पर जब तक मैं छोड़ने के लिए न कहूँ, तब तक न छोड़ो।" कहकर वह दो कदम आगे बढ़ा। "श्वानकर्णी, लगता है, तुम कुछ धोखा देना चाहते हो। अगर ऐसा किया गया, तो पहिले तुम मरोगे। समझे! तुम्हारी छाती का हमने निशाना लगा रखा है, यदि तुमने भागने की कोशिश की, तो यह बाण तुम्हारी छाती को मारकर जायेगा।"

जयमल्ल ने कहना बन्द किया था कि श्वानकर्णी के अनुयायियों ने उन पर पत्थर लुढ़काने छोड़ दिये। इतने में श्वानकर्णी के अनुचर ने जयमल्ल को दिखाकर उससे कुछ कहा। उसने दो तीन बार अपना सिर इधर उधर हिलाया। फिर जयमल्ल की ओर मुड़कर ऊँची आवाज़ में कहा—"तुम हमारे शत्रुओं के मित्र हो। इसलिए

हमारे शत्रु हो। तुम हमारे यहाँ से जीते जी नहीं भाग सकते।"

यह सुनते ही केशव ने दान्त पीसकर बाण को ऊपर दिखाकर कहा—"जयमल, अब देरी करने से कोई फायदा नहीं। उस श्वानकर्णी को और उसके पाँच दस साथियों को मारकर, यहाँ से भाग जायें। बाण चढ़ाओ।"

जयमल ने केशव को जल्दीबाजी करने से रोका और कहा—"केशव! हम इस प्रान्त में नये हैं। यहाँ रहनेवाले जंगली जातियों का वैरी होकर, हम न भाग सकेंगे। हम अपने जन्म स्थल को छोड़कर, जब से निकले हैं, तब से झगड़ा ही मोल ले रहे हैं, किसी से भी हमने मैत्री नहीं की है। ब्रह्मदण्डी हमारा पीछा कर ही रहा है, यदि हम जंगली जातिवालों से दोस्ती कर सकें, तो इनसे, सम्भव है कि हम भयंकर घाटी का रास्ता मालूम कर सकें। यही नहीं, यदि तुम्हारा पिता इस तरफ़ आया, तो इनसे दोस्ती करने से उसकी भी मदद हो सकती है।"

पिता का नाम सुनते ही केशव पसीना पसीना हो गया। उसने बाण उतारते हुए

कहा—"पर इनसे मैत्री कैसे की जाये? ये तो कच्चा माँस खानेवाले जंगली हैं।"

यह सब मुझ पर छोड़ दो। यह दिखाकर कि पंखवाले मनुष्यों से आपत्ति आनेवाली है, मैं बिड़ाली और श्वानकर्णी की मैत्री करने की कोशिश करूँगा। ये दोनों पहाड़ी गुफाओं में तो रहते हैं!" कहकर जयमल ने श्वानकर्णी की ओर मुड़कर कहा—"श्वानकर्णी, हम तुम्हारी धमकियों से डरनेवाले नहीं हैं। हमने बिड़ाली के गुटवालों को वचन दिया है कि हम उनकी पंखवाले मनुष्यों से रक्षा करेंगे।

उन पंखवाले मनुष्यों में से हमने दस ग्यारह को मार भी दिया है। यदि तुम दोनों यों आपस में लड़ते रहे, तो एक दिन वे दुष्ट तुम्हारे गुट के लोगों को भी उड़ा ले जायेंगे। हाँ, मगर यह तो बताओ कि तुममें और बिड़ाली में क्यों शत्रुता है?"

"शत्रुता का कारण! उस बिड़ाली और उसके लुचों के से नीच कहीं भी न होंगे। हमारी गुफाओं में से, जब हम वहाँ नहीं थे, वे हमारे आदि पुरुषों की गदा उठाकर ले गये। उस गदा में कितनी ही शक्तियाँ हैं। उसको फिर से पाने के लिए, हम उनका सर्वनाश करने जा रहे हैं।" श्वानकर्णी ने दान्त पीसते हुए कहा।

"यदि उस पत्थर की गदा को बिड़ाली ने लाकर दिया, तो क्या दोनों के बीच शत्रुता चली जायेगी?" जयमल ने पूछा।

श्वानकर्णी ने परिहास करते हुए कहा—"बिड़ाली! वह गदा मुझे लाकर देगा! यह कैसे सम्भव है! उस गदा के लिए न मालूम, वह क्या करेगा! अपने गुट के सब लोगों को मरने भी देगा।"

"बिड़ाली का रहस्य मैं जानता हूँ। तुम्हारे मूल पुरुष की पत्थर की गदा बिड़ाली के यहाँ से लाकर तुम को दूँगा।" कहकर, जयमल पीछे खड़े, बिड़ाली गुट के आदमी की ओर देखकर कहा—"सब सुन लिया है न! तुरत जाकर, अपने सरदार से कहो कि मैंने उसे पत्थर की गदा लेकर आने के लिए कहा है। उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" बिड़ाली का आदमी तुरत निकल पड़ा।

[अभी है]

पुनर्जन्म

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा, पेड़ के पास गया। शव उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम्हारे साहस, सहन और लगन का कितना बड़ा परिणाम होगा, मैं कल्पना नहीं कर पा रहा हूँ। कभी कैरम नामक सैनिक इसी तरह की परिस्थिति में फँस गया था। यद्यपि उसने तुमसे कम ही लगन दिखाई थी पर उसके फल में, उसने एक राजकुमारी से विवाह किया। ताकि तुम्हें मेहनत न मालूम हो, उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।"

एक देश में एक राजा रहा करता था। उस राजा के सन्तान न हुई। उसे सन्तान न होने का दुख था और इधर उसके कर्मचारी कहा करते थे। "महाराज,
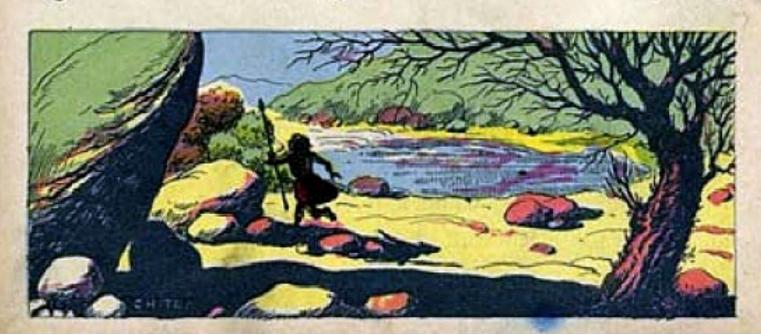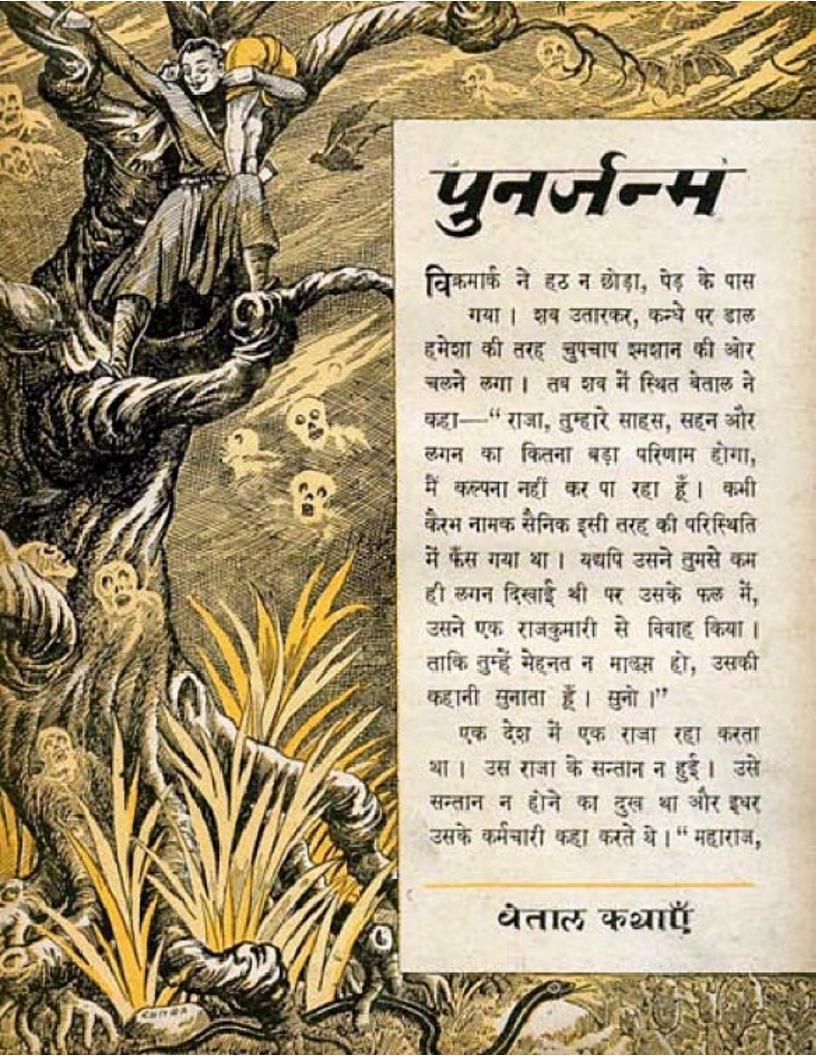
आपके बाद कौन राज्य करेगा? यह सुन राजा का दुख और बढ़ता। उसने कहा—"लंगड़ा, लूला ही सही। एक लड़का हुआ, तो मैं कितना सन्तुष्ट होऊँगा।"

राजा के यह कहने पर, रानी गर्भवती हुई। ठीक समय पर उसने एक लड़की को जन्म दिया। वह लड़की सुन्दर थी। सब तरह ठीक भी थी, पर बहुत काली थी।"

राजा को सन्तोष हुआ और दुख भी। उसने रानी से कहा—"यह कोई शाप है। कुछ भी हो, यह हमारी लड़की है। यही नहीं, बहुत दिनों बाद पैदा हुई है।"

उसने अपनी लड़की के लिए एक अलग महल बनवाया। उसको खूब सजाया। लड़की को पालने पोसने के लिए, दासी और नौकरों को नियुक्त किया। फिर उसने अपने राज्य के पंडित, ज्योतिषी और मन्त्रवेत्ताओं और ज्ञानियों को एकत्र करके कहा—"मेरी लड़की जब गर्भ में थी तभी वह शापग्रस्ता-सी हो गई थी। क्या कभी पहिले ऐसा हुआ है? यह कैसे हटाया जा सकता है? आप, अपनी बुद्धि और चातुर्य का उपयोग करके इस शाप को हटाने में लगाइये।" हर किसी ने कुछ न कुछ कहा। ज्योतिषियों ने कहा कि ग्रहदोष था। ज्ञानियों ने कहा कि प्रारब्ध था। ग्रह-शान्ति और मन्त्रोच्चारण से कुछ भी फायदा न हुआ। एक बुढ़िया ने राजा के पास आकर कहा—"लड़की जब अट्ठारहवीं वर्ष की होगी, तो उस पर आपत्ति आयेगी। जब वह आपत्ति चली जायेगी, तो वह मामूली लड़की हो जायेगी। आप दुखी मत होइये।" कहकर वह चली गई।

राजकुमारी, रोज बरोज और खूबसूरत होती जाती थी। चूंकि वह कोयले जितनी काली थी, इसलिए उसका सौन्दर्य कहीं भी न निखरा। उस लड़की का स्वभाव बड़ा मीठा था। इसलिए सब उसको बड़े प्रेम और अभिमान से देखते।

होते होते, राजकुमारी ने सत्रह वर्ष पूरे किये। अट्ठारहवाँ वर्ष शुरु हुआ। उसका जन्म दिन बड़े वैभव के साथ मनाया गया। उसके अगले दिन ही उसको विचित्र बीमारी हुई। उसने अपने पिता को बुलाकर कहा—"पिताजी! अब मैं जीवित न रहूँगी। पर, मरने के बाद मुझे गाड़िये मत। एक पेटी में रखकर, उस अंगन में रखवा दीजिये, जहाँ हमारे वंशवालों के लिए अलग समाधियाँ बनायी जाती हैं। वहाँ हर रोज रात को एक सिपाई को पहरे पर रखिये।" उसने फिर प्राण छोड़ दिये।

राजकुमारी के शव को, एक पेटी में रखकर, बाजे गाजे के साथ उस श्मशान में ले गये जहाँ राजाओं की समाधियाँ थीं। उस पेटी को, वहाँ के एक मण्डप में रखवा दिया। श्मशान में शव की रक्षा के लिए, राजकुमारी ने यद्यपि एक मामूली सिपाही को रखने के लिए कहा था, तो भी राजाने अपने अंगरक्षकों में से एक योद्धा को इस काम पर रखा। उसको सैनिक श्मशान तक भेजकर चले आये। उस योद्धा ने दरवाजे बन्द कर लिये और मण्डप की सीढ़ियों पर बैठ गया।
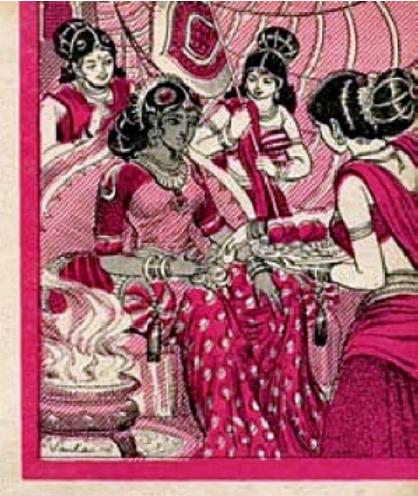
ठीक आधी रात के समय शववाली पेटी का ढकन तपाक से खुला। राजकुमारी योद्धा पर कूदी। उसका गला घोंटकर, समाधियों के बीच खूब नाचकर, चिल्लाकर, सवेरे के समय अपनी पेटी में फिर वापिस चली गई। यह

सब उसने इसलिए किया था, क्योंकि उसके अन्दर बेताल ने प्रवेश कर लिया था।

सबेरे होते ही सैनिक आये। श्मशान में घुसते ही उन्होंने योद्धा का शव देखा। यह सुन राजा को बड़ा दुख हुआ। फिर भी उसने दूसरी रात को, एक और योद्धा को पहरे पर भेजा। वह भी बेताल का शिकार हुआ।

राजा घबराया। उसने अपने मन्त्रियों से विचार विमर्ष किया। "जब से वह पैदा हुई थी, तभी से राजकुमारी को किसी चीज़ ने पकड़ रखा है। कहीं वह ब्रह्मराक्षसी तो नहीं है? यदि मरने के बाद, यदि हम उसे जला देते, या गाड़ देते, तो यह सब न होता। अब भी यह किया जा सकता है।" मन्त्रियों ने कहा।

राजा को यह विचार अच्छा न लगा। वह अपनी लड़की की अन्तिम इच्छा को पूरा किये बिना नहीं रह सकता था। फिर भी उसने अपने सेनापति को बुलाकर कहा—"धैर्यशाली और साहसी सैनिकों को चुनकर मेरे पास भेजो।"

दस सैनिक राजा के पास आये। राजा ने उनसे पूछा—"तुम में से आज रात

को श्मशान में कौन पहरा देगा! यह मामूली पहरा नहीं है। प्राणों पर भी आ सकती है। जो जीवित आयेगा मैं उसको आधा राज्य दे दूँगा।"

उन सैनिकों में से, कैरभ नामक व्यक्ति ने आकर कहा—"महाराज, मुझे पहरे पर भेजिये।"

यह कैरभ बड़ा साहसी था, जीवन से वह विरक्त था। युद्ध में भेजे जाने पर, सोच विचारकर न लड़ता, शत्रुओं पर लपकता और उत्पात मचाता। कई बार, उसका जीवन खतरे में पड़ा। पर चूँकि आयु थी, इसलिए वह जीवित ही रहा। रोजमर्रे के जीवन में भी उसका कुछ कुछ यही रवैय्या रहता। उसे जुये का बड़ा शौक था। जो कुछ पास होता, उसे बाजी लगा देता और खो बैठता। उसे जीवन में सुख न था। जुआखोरी की मनोवृत्ति के कारण, वह पहरा देने के लिए मान गया।"

तीसरे दिन रात को, सैनिक, कैरभ को श्मशान तक ले जाकर छोड़ आये। निर्जन प्रदेश, घना अन्धकार, राजकुमारी के शव में कोई भूत—इन सब का ख्याल करके,
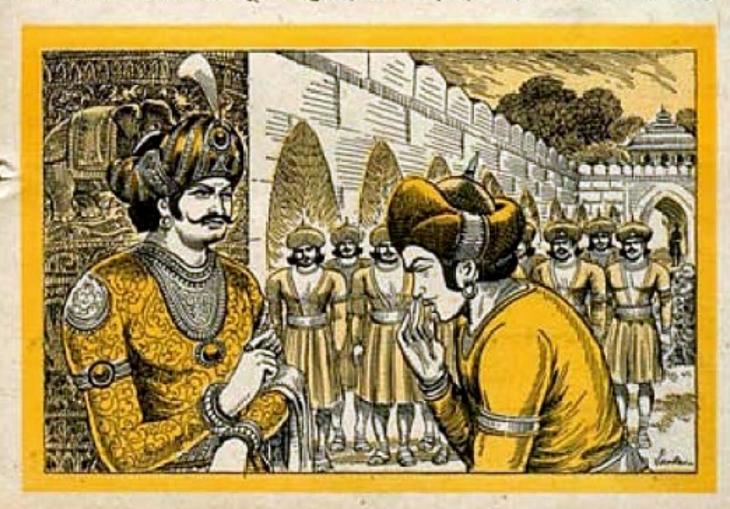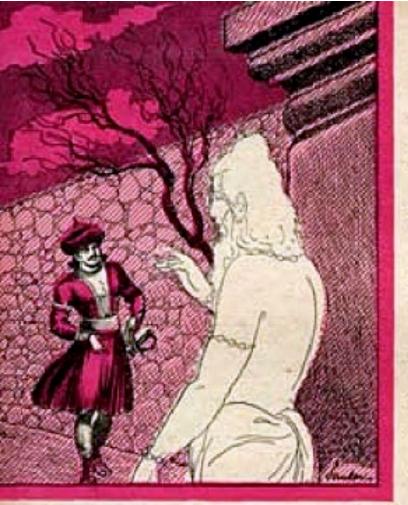
कैरभ को जीवन में पहिली बार डर लगा। शत्रुओं से लड़ना एक और बात थी पर ब्रह्मराक्षसी से कैसा लड़ा जाये!

कैरभ ने सीधे घर जाने का निश्चय किया। श्मशान में यदि पहरा न दिया, तो राजा उसका सिर कटवा सकते हैं, नहीं तो कई और दण्ड दे सकते हैं। परन्तु यदि उसने पहरा दिया, तो आधी रात उसकी मृत्यु अवश्य होती।

यह सोच, कैरभ ने श्मशान के द्वार से तीन चार कदम आगे रखे थे कि उसको रास्ते में एक सफेद आकृति दिखाई दी। सफेद कपड़े, सफेद दाढ़ीवाला, कोई मुनि-सा दिखाई दिया।

"अरे बेटा, जा रहे हो!" मुनि ने पूछा।

"क्योंकि मैं मरना नहीं चाहता।" कैरभ ने कहा।

"अरे पगले! तुम नहीं मरोगे। जैसा मैं कहूँ, वैसा करो। यह विभूति लो। आधी रात के समय, राजकुमारी के शववाले पेटी के पास, जिस तरफ़ वह खुले उसी तरफ़ लेटे रहो। राजकुमारी जब पेटी से निकलेगी, तब तुम्हें देखेगी नहीं। वह तुम्हारे लिए सारा श्मशान खोजेगी। तुम इस के बाद, उस पेटी में, यह विभूति छिड़ककर, उसमें सो जाओ। राजकुमारी वापिस आकर, तुम्हें बाहर आने के लिए कहेगी। पर तुम न हिलना। जब वह बुलाये, तो न बोलना। बेताल ही तुम्हें पुकार रहा होगा। जब तक तुम यह न जान लो कि बेताल उसको छोड़कर नहीं गया है, तब तक तुम न हिलना न बोलना। पेटी से बाहर न निकलना। सवेरा होने के बाद, तुम्हें बेताल का डर नहीं रहेगा। जाओ। पहरा दो।" कहकर उस मुनि ने

कैरभ के हाथ में विभूति रखी। कैरभ का हौसला बढ़ा। वह निश्चिन्त हो, गाता, श्मशान में घूमता रहा। जब तारों से वह पता लगा सका कि आधी रात होनेवाली थी, वह मण्डप में गया। शववाले पेटी के पास ही लेट गया। ठीक आधी रात के समय पेटी का ढक्कन यकायक खुला। राजकुमारी पेटी से बाहर निकली, मण्डप से नीचे कूदी और पहरेवाले को खोजने लगी। उसका मुँह उस समय बड़ा भयंकर था। उसकी आँखें आग बरसा रही थीं।

कैरभ, जहाँ छुपा था, वहाँ से उठा। अपने हाथ की विभूति पेटी में छिड़ककर राजकुमारी की जगह वह स्वयं लेट गया।

राजकुमारी, चिल्लाती चीखती, श्मशान में बहुत देर तक घूमती खोजती रही। बीच बीच में "भूख भूख" भी चिल्लाई। "कहाँ हो! आओ बाहर! शायद सोच रहे हो कि मैं तुम्हें पकड़ नहीं पाऊँगा।" कहती उसने सब समाधियों के पीछे खोजा। आखिर वह एक छलांग में मण्डप पर आयी। पेटी में सोये हुए कैरभ को देखकर कहा—"तो यहाँ हो! आओ इधर! यह मेरा घर है।" उसकी आवाज में कड़वापन था। कैरभ न हिला, न कुछ बोला ही। राजकुमारी ने उससे कई प्रश्न किये। परन्तु उसने एक का भी जवाब न दिया। उसे उसने डराया। उसने यों दिखाया जैसे वह उसे बाहर खींच रही हो।" कैरभ हिला नहीं।
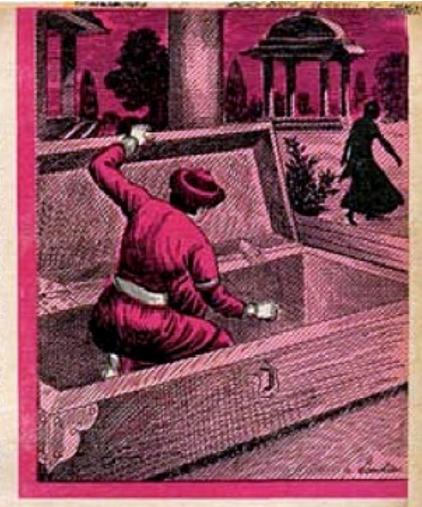
धीमे धीमे जब उसको लगा कि उसकी आवाज का कड़वापन कम होता जा रहा था तो उसने आँखें आधी खोलकर उसकी ओर देखा। उसका मुँह, जो काला होना चाहिए था, गोरा था। उसके गले पर

काला रंग छूटता देख, उसको बड़ा आनन्द हुआ।

फिर भी, वह उससे बुल्वाने की प्रयत्न कर रही थी। यह प्रयत्न बेताल ही उससे करवा रहा था। कैरभ यह जान गया। उसने फिर यह भी देखा, कि उसकी आवाज मामूली होती जा रही थी। जब तक मुरगोंने बाँग देना शुरू न किया, तब तक वह पेटी में ही आँखें मूँदकर लेटा रहा। फिर उसने आँखें खोलीं। राजकुमारी संगमरमर की मूर्ति की तरह खड़ी थी। उसने झुककर, उसका हाथ पकड़कर प्रेम से कहा—"मेरी रक्षा की है तुमने! अब उठो।"

जब सवेरे सैनिक आये, तो कैरभ और राजकुमारी को मण्डप की सीढ़ियों पर बातचीत करते देख कैरभ को जीवित पाकर उनको उतना आनन्द नहीं हुआ जितना कि राजकुमारी को जीवित पा और उसके शरीर का काला रंग हटा हुआ और उसको गोरा देख हुआ था।

राजा और उसके अनुचरों के आनन्द की तो सीमा ही न थी। राजा ने दरबार में कैरभ की प्रशंसा करते हुए कहा—

"इसको पहरा देने के लिए ही मैंने आधा राज्य देने के लिए कहा था। इसने मेरी लड़की को शाप से भी विमुक्त किया है। इसलिए क्या आप सलाह दे सकेंगे कि इसको मैं किस तरह पुरस्कृत करूँ!"

"साधारण सैनिक है। अर्ध राज्य पर भी शासन करने योग्य नहीं है। उसकी शक्ति के अनुकूल ही पुरस्कार दीजिये। यही काफी है।" मन्त्री आदियों ने सलाह दी।

राजकुमारी, यह सब परदे के पीछे से सुन रही थी। उसने दरबार में आकर कहा—"आप बहुत गल्ती कर रहे हैं। इन्होंने मेरी बेताल से रक्षा की है। इसलिए मैं इनकी शक्ति के बारे में आपसे अधिक जानती हूँ। मैं इससे शादी करना चाहती हूँ। मेरा उनसे विवाह करके, सारा राज्य दीजिये। यह ही उनके लिए ठीक पुरस्कार है।

राजकुमारी ने जब भरे दरबार में कहा तो उसका विरोध करनेवाला वहाँ कोई न था। राजा तो, अपनी लड़की के लिए सब कुछ करने को तैयार ही था। उसने कैरम से अपनी लड़की का विवाह किया और उसको गद्दी भी दी।
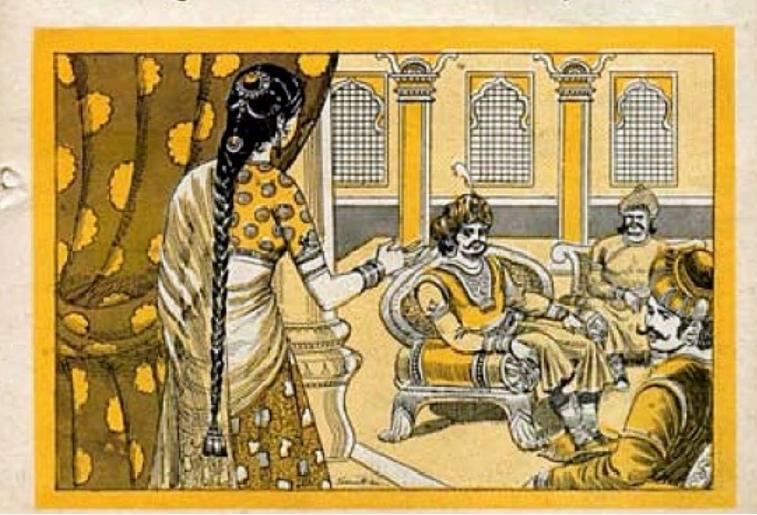
वेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—राजन! राजकुमारी ने अपनी हैसियत भूलकर एक सामान्य सैनिक से क्यों प्रेम किया? बेताल से रक्षा की थी। क्या इसलिए कृतज्ञतावश या इसलिए कि वह उसके साहस की प्रशंसा करती थी? ये मेरे सन्देह हैं। यदि तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"राजकुमारी को कैरम के साहस को देखकर आनन्द हो सकता है। यह भी हो सकता है कि वह उसके प्रति कृतज्ञ हो क्योंकि उसने रक्षा की थी। परन्तु उससे प्रेम करने का कारण कुछ और था। राजकुमारी भी यदि वैसे ही रहती तो कैरम से प्रेम करने की न सोचती। परन्तु वह राजकुमारी के तौर पर मर चुकी थी और उसने पुनर्जन्म पाया था। इस नये जन्म में ही कैरम उसका प्रिय था। जो सम्बन्ध जन्म से पैदा होते हैं, उनकी कोई आलोचना नहीं करता। माँ बाप, बच्चों का और बच्चे माँ बाप का पूरी तरह समर्थन करते हैं। इसका उदाहरण राजा ही है। यद्यपि उसकी लड़की बहुत काली थी फिर भी वह उसके सुख के लिए हर तरह से प्रयत्न करता रहा। उसी तरह राजकुमारी ने भी, पुनर्जन्म द्वारा प्राप्त कैरम का भी पूरी तरह समर्थन किया। क्योंकि वह सयानी थी इसलिए उसका लगाव प्रेम में व्यक्त हो सका।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही। वेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

ठीक नाक के सीधे

ज़मीन्दार के गाँव के दस मील की दूरी पर श्रीपुर नामक गाँव में नवरात्री के दिन देवी के मन्दिर में ज़मीन्दार की तरफ़ से पूजा करवाने का रिवाज़ था। ज़मीन्दार स्वयं तो पूजा के लिए जा नहीं पाते थे, पर किसी न किसी को इस काम के लिए अवश्य भेजते। यह काम इस बार भीम को सौंपा गया।

"भीम, आज तुम गाड़ी में श्रीपुर जाओ, हमारी तरफ़ से देवी के मन्दिर में पूजा करवाकर, शाम तक वापिस आ जाओ।" ज़मीन्दार ने अपने दामाद से कहा। गाड़ी में फल, नारियल और पूजा द्रव्य रखवाये गये। भीम भी सवार हो गया। गाड़ी निकली।

थोड़ी दूर जाने के बाद, गाड़ीवाले ने गाड़ी रोककर कहा—"बाबू, ज़रा एक मिनिट ठहरिये, मैं भी अपने घर जाकर, एक नारियल लाकर देवी पर चढ़ाऊँगा।" वह पासवाले मकान की ओर भागा।

भीम ने कभी गाड़ी नहीं चलाई थी। गाड़ीवाले ने जल्दी आने के लिए कहा था ही इस बीच उसने गाड़ी धीमे धीमे चलाने की सोची। एक हाथ में लगाम ली और दूसरे में छड़ी। बैल को हाँका। बैल तेज़ी से चल पड़े। भीम कहता ही रहा "धीमे धीमे" पर बैलों ने न माना। भीम को गुस्सा आ गया, उसने छड़ी से बैलों को खूब पीटा। वे और ज़ोर से भागे। जिस तेज़ी से वे भागते जाते थे उस तेज़ी से भीम का गुस्सा भी बढ़ता

एक तरफ़ की लगाम खींची, इसलिए बैल एक तरफ़ मुड़े, वे पासवाले नहर में उतरे और वहीं रुक गये।

थोड़ी दूर पर एक धोबी कपड़े धो रहा था। यह सब देख, वह भागा-भागा आया। "क्यों जानबूझ कर गाड़ी को नहर में हाँक दिया आपने!" भीम से पूछा।

"क्या जान-बूझकर हो रहा है! देखते नहीं हो! बैल प्यासे हैं। पानी पी रहे हैं।" भीम ने कहा।

भीम की बात पूरी होने से पहिले ही बैलों ने पानी पीना छोड़ दिया। गाड़ी को नहर में से सड़क पर न ले जा सका। धोबी ही गाड़ी को सड़क तक ले गया।

"देखो, श्रीपुर का रास्ता कौन-सा है!" भीम ने धोबी से पूछा।

"श्रीपुर अगर जाना है, तो इस तरफ़ आना ही नहीं चाहिए था। इस रास्ते ठीक वापिस जायेंगे, तो एक रास्ता आयेगा, दायें तरफ़ मुड़कर, ठीक नाक के सीधे गये, तो श्रीपुर आयेगा।" धोबी ने कहा। भीम को सन्देह हुआ। "नाक के सीधे का मतलब! किसकी नाक के सीधे! बैलों की नाक के सीधे!" उसने धोबी से पूछा।

जाता था। वह चिल्लाया। बैलों को खूब मारा। न उन्होंने रास्ता देखा, न कुछ, वे घोड़ों की तरह भागने लगे। भीम को न मालूम था कि श्रीपुर किधर था और किधर गाड़ी जा रही थी।

इतने में भीम को लगाम खींचने की सूझी। जब कभी वह गाड़ी को रोकना चाहता था, तब गाड़ीवाला लगाम खींच करे "हो, हो" किया करता था, यह भीम को याद हो आया। उसी प्रकार भीम ने भी ज़ोर से लगाम खींची। "हो, हो" चिल्लाया। परन्तु दुर्भाग्य से भीम ने

धोबी को भीम का मामला समझ में आ गया, "तुम तो इधर उधर फिरोगे। बैल बिना घूमे ठीक नाक के सीधे जायेंगे।" धोबी ने भीम से कहा।

यह सुन भीम को सन्तोष हुआ। उसने गाड़ी में बैठकर बैलों से कहा—"ठीक, नाक के सीधे जाओ।" उसके बाद गाड़ी के हिलने से भीम की आँख लग गई। क्योंकि उनको कोई हाँक नहीं रहा था, इसलिए बैलों ने आराम से घर का रास्ता नापा।

शाम को भीम की पत्नी महालक्ष्मी, जब गाँव के मन्दिर में पूजा करवाने जा रही थी, तो उस गाड़ी को सामने से आते देखा, जिसमें उसके पति गये थे। पहिले उसने सोचा कि श्रीपुर में काम पूरा करके उसके पति वापिस आ रहे थे। पर जब गाड़ी वापिस आई, तो उसने देखा कि गाड़ी में गाड़ीवाला न था। पति अन्दर सो रहे थे। फल, नारियल, पूजा द्रव्य भी गाड़ी में ही थे।

वह गाड़ी के सामने खड़ी हो गई। बैलों को रोका। पति को उठाकर पूछा—"यह क्या! क्या आप श्रीपुर गये ही नहीं? कहाँ से वापिस आ रहे हैं?"
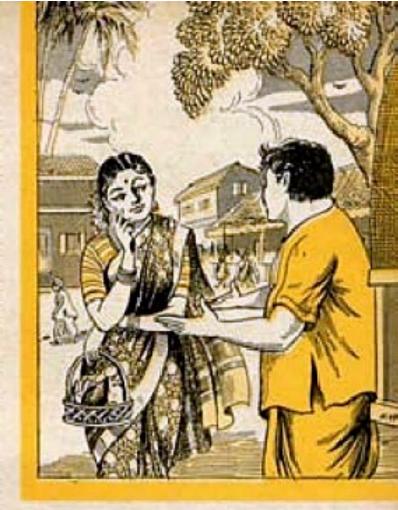
भीम ने उठकर पूछा—"क्या श्रीपुर आ गया है? फिर पत्नी को देखकर चकित होकर, जो कुछ हुआ था, उसने उसे बताया, सब सुनकर महालक्ष्मी ने भीम से कहा—"जो हुआ, सो हुआ। आज हम अपने गाँव के मन्दिर में ही पूजा करें। कल मैं भी श्रीपुर आऊँगी।"

दोनों ने मिलकर मन्दिर में पूजा करवाई। प्रसाद लेकर घर पहुँचे। ज़मीन्दार सवेरे एक और गाँव गये थे। शाम को घर पहुँचे। महालक्ष्मी ने अपने पिता को प्रसाद देते हुए कहा—"सवेरे गाड़ीवाला

बीच रास्ते में कहीं चला गया और जब वह न आया, तो आपके दामाद श्रीपुर स्वयं गाड़ी ले गये और वहाँ पूजा करवाई। वहाँ बड़े ज़ोर शोर से उत्सव मनाये जा रहे हैं। कल वे मुझे भी साथ बुला रहे हैं।"

इतने में गाड़ीवाला भी आया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। इससे पहिले कि वह कुछ कहता, महालक्ष्मी ने उसे डपटा। "क्यों, इन्हें रास्ते में छोड़कर कहाँ चले गये थे? बहुत देखा और जब तुम न आये, तो उनको गाड़ी स्वयं ले जानी पड़ी। क्या काम इसी तरह किया करते हैं?"

"मैं तभी वापिस चला आया था, पर गाड़ी का कहीं पता न था, तब मैं पैदल श्रीपुर गया। वहाँ भी न मालिक दिखाई दिये, न गाड़ी ही।" गाड़ीवाले ने कहा।

"यदि तुम तभी आ जाते, तो गाड़ी क्यों कहीं जाती? जब तुम पैर घसीटते घसीटते श्रीपुर पहुँचे, तो मालिक पूजा करवाकर, वापिस आ रहे होंगे।" महालक्ष्मी ने कहा।

"सारे रास्ते देखता रहा।" गाड़ीवाला कह रहा था और महालक्ष्मी ने उसको और कुछ कहने न दिया। "आज जो हुआ, सो हुआ। हम दोनों कल श्रीपुर जा रहे हैं, सवेरे ही गाड़ी जोतकर लाओ।" यह सोच कि बला टल गई थी, गाड़ीवाला चला गया। अगले दिन भीम के साथ महालक्ष्मी भी गई। श्रीपुर में पूजा करवाकर आई। दोनों खुशी खुशी घर चले आये।

[अगले मास एक और घटना]

अभिप्राय भेद

दो भाई जब गाँव से बाहर थे, तो उनको आकाश में एक जल मुरगाबी आती दिखाई दी। भाई ने धनुष पर बाण रखते हुए कहा—"मैं उस को मार दूँगा। घर ले जाकर उसको उबाल कर खा लेंगे।"

"नहीं, नहीं, भून कर खायेंगे, तो और अच्छा होगा।" छोटे भाई ने कहा।

दोनों में कुछ देर तक यों तर्जन भर्जन हुआ। फिर वे बड़ों से पूछने गाँव में गये। बड़ों ने कहा कि पहिले किसी चीज़ को उबाल कर फिर भूनना अच्छा है।

यह दोनों भाइयों को जंचा। जल मुरगाबी को मारने गाँव से बाहर गये। पर तब तक वह कहीं चली गयी थी।

मानसिक भ्रम ★ [रामतीर्थ कथा]

एक बार बीरबल और अकबर में यह सवाल उठा कि संसार में आँखोंवाले अधिक हैं या अन्धे। बीरबल ने कहा कि कौन अधिक हैं, वह प्रत्यक्ष दिखायेगा।

उसने अपने सिर पर एक कपड़ा लपेटा और दरबार में बगल में बैठे व्यक्ति से पूछा—"मेरे सिर पर क्या है?" उस आदमी ने जवाब दिया—"पगड़ी।" बीरबल ने वह कपड़ा सिर से उतार कर, एक और से पूछा—"यह क्या है?"

"दुपट्टा है!" उस व्यक्ति ने कहा।

थोड़ी देर बाद उसी कपड़े को पहिनकर, उसने दरबार में एक और व्यक्ति से पूछा—"यह क्या है?"

"धोती।" उस व्यक्ति ने कहा।

"अन्धे, सब अन्धे हैं। यह कपड़ा है। इसको एक ने पगड़ी बताया, दूसरे ने दुपट्टा कहा और तीसरे ने इसको धोती समझा।" बीरबल ने कहा।

अकबर यह सुन खुश हुआ।

गन्धर्व सम्राट की लड़की

[५]

अब्दुल कद्दूस के दिये हुए नीले घोड़े पर सवार होकर, हसन ने लगाम छोड़ दी। तब घोड़ा, बाण की तरह सीधा उड़ा। दस दिन में, दस वर्षों में तय किया जानेवाला रास्ता तय करके, एक काली पर्वत श्रेणी पर पहुँचा।

नीले घोड़े के ज़ोर से हिन हिना कर, पर्वतों पर उतरते ही, न मालूम कहाँ से, हज़ारों काले घोड़ों ने आकर नीले घोड़े को घेर लिया। नीला घोड़ा, उनके बीच में से जाकर, एक काली गुफ़ा के पास पहुँचा। गुफ़ा के बाहर ही हसन को उतारकर, वह गुफ़ा के अन्दर चला गया।

गुफ़ा से बाहर, हसन के एक घंटा प्रतीक्षा करने के बाद, एक आदरणीय वृद्ध गुफ़ा से बाहर आया। वह कोयले की तरह काला तो था ही उसने काले कपड़े भी पहिन रखे थे। केवल उसकी दाढ़ी, जो कमर से नीचे लटक रही थी, सफ़ेद थी। वह साक्षात् सुलेमान का लड़का अलि था। हसन ने उसके सामने भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। फिर उसने अब्दुल कद्दूस का लिखा पत्र दिया। अली उस पत्र को लेकर, गुफ़ा में चला गया।

काफ़ी समय हो गया। हसन निराश हो रहा था कि वृद्ध सफ़ेद कपड़े पहिनकर गुफ़ा से बाहर आया और अन्दर आने के लिए ईशारा किया और वह उसको अपने साथ एक कमरे में ले गया। वह रत्नों से जड़ा कमरा था। उसके चारों कोनों में,

कालीनों पर, चार ज्ञानी बैठे हुए थे। उनकी बगल में, पुस्तकों के ढेर के ढेर पड़े थे। कमरे के बीच में वृद्ध के सात शिष्य थे। वे कुछ लिख रहे थे, पढ़ रहे थे और सोच रहे थे।

अली के आते ही सब उठे। उसके कमरे में बैठते ही सब आकर, उसको घेर कर बैठ गये। तब हसन ने उन सब को, अपनी कहानी सुनाई। हसन की बात सुनकर, उसकी सहायता करना ही उचित था, सबने बूढ़े को सलाह दी। उनकी सलाह सुनकर उसने कहा—"सच है, पर वाक वाक द्वीप में जाना आसान नहीं है। वहाँ से वापिस आना और भी कठिन है। योद्धा कन्याओं से जो आफ़त आ सकती है, उसके बारे में कहने की आवश्यकता ही नहीं है। यह लड़का अपनी पत्नी से कैसे मिल सकेगा? यह मुझे समझ में ही नहीं आ रहा है।"

इनकी बात सुनकर, हसन ने बूढ़े के पैरों पर पड़कर कहा—"मुझे पुत्र दान और पत्नी दान कीजिये।"

"मरने के लिए तुम जैसा मैंने किसी को उतावला नहीं देखा है। शायद तुम बिल्कुल नहीं जानते कि तुम कितना खतरनाक काम करने जा रहे हो, फिर भी जो कुछ मुझसे बन सकेगा, मैं करूँगा।" कहते हुए बूढ़े ने अपनी दाढ़ी में से एक बाल निकालकर, हसन को देते हुए कहा—"सब से मुख्य है आपत्तियों से बाहर निकलना। जब कभी तुम्हारे प्राणों पर आ पड़े, तो उसमें से एक बाल जला देना, मैं तुरत तुम्हारी सहायता करने आऊँगा।" फिर उसने ऊपर देख कर, ताली बजाई। तुरत एक भूत प्रत्यक्ष हुआ। वृद्ध ने हसन से कहा—"इसकी पीठ पर सवार

होकर जाओ। यह तुम्हें कर्पूर द्वीप में उतार देगा। उसके बाद तुम्हें ही अपना रास्ता स्वयं देखना होगा। कर्पूर द्वीप के बाद तुम्हें वाक वाक द्वीप के समुद्र का इस तरफ का किनारा दिखाई देगा। उसके बाद बस भगवान हैं।"

हसन वृद्ध को और बाकी लोगों को नमस्कार करके, भूत की पीठ पर सवार हो गया। भूत आकाश में से होता कर्पूर द्वीप पहुँचा और वह चला गया। चम-चमाते, महकते उस कर्पूर द्वीप के मैदान में वह चलने लगा। कुछ दूर चलनेके बाद, उसको तम्बू-सा कुछ दिखाईदिया। ऊँची घास में से, वह उस तम्बू की ओर चला, उसके पैर में कुछ लगा और वह गिर गया।

हसन के पैर में एक महाकाय का शरीर लगा था, जो उसे तम्बू की तरह दिखाई दिया था, वह उस महाकाय का कान था। वह घास में पड़ा सो रहा था, हसन के पैर उस पर पड़ते ही, वह ताड़ के पेड़ की तरह उठ खड़ा हुआ। हसन को उसने यों पकड़ा, जैसे वह कोई चिड़िया हो।

हसन छटपटाता चिल्लाया—"मदद करो, मदद करो।"

"यह पक्षी कुछ अजीब ढंग से चह चहा रहा है। मैं इसे अपने राजा को भेंट में दे दूँगा।" उस महाकाय ने सोचा।

कर्पूर द्वीप का राजा एक पत्थर पर बैठा हुआ था। उसने भी सोचा कि हसन कोई पक्षी था और "मदद करो, मदद करो" उसका चिल्लाना भी उसे बड़ा मीठा लगा। उसने हसन को एक पिंजरे में रखा। उसके खाने पीने की चीज़ों की व्यवस्था उसी पिंजरे में कर, उसने उस पिंजड़े को अपने घर के आगे लटका दिया।

रोज गुजरने लगे। हसन पिंजड़े में सूखने-सा लगा। उस हालत में उसे बूढ़े की बातों की याद हो आई। राजकुमारी उसको टहलने के लिए पिंजरे में ले जा रही थी कि वह उसकी पकड़ से छूट गया और उसने वृद्ध का एक बाल जला दिया।

तुरत वृद्ध ने प्रत्यक्ष हो कर पूछा—"क्या चाहिए, हसन!"

"मुझे यहाँ से कहीं और ले जाइये। यदि यहाँ एक और रोज गुजरा तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे।" हसन ने कहा।

"मैंने कहा था न! अभी तो कुछ भी नहीं हुआ। अभी तो तुम मुझे बुला सके। पर वाक वाक द्वीप में ये मन्त्र-तन्त्र नहीं चलेंगे। यह प्रयत्न तुम्हें कभी का छोड़ देना चाहिए था।"

"मैं प्रयत्न करता ही रहूँगा। मैं मरने के लिए भी तैयार हूँ। जब मौत दी है, तो वह आयेगी ही, पहिले तो आयेगी नहीं। मैं अपनी पत्नी को ढूंढना कैसे छोड़ दूँगा! कृपया, मुझे रास्ता दिखाइये।" हसन ने कहा। वृद्ध ने हसन का हाथ पकड़कर कहा—"तुम एक बार अपनी

आँख बन्द करके खोलो।" हसन ने जब आँखें बन्द करके खोलीं, तो वह एक समुद्र के किनारे खड़ा था। वृद्ध का कहीं पता न था। वह जिस किनारे खड़ा था, वहाँ रंग रंग के रत्न थे। उसने एक बार चारों ओर देखा, तो उसे समुद्र तट के पहाड़ों पर से, बड़े बड़े आकार वाले पक्षी "वाक वाक" करते झुन्डों में उठे।

हसन जान गया कि वह वाक वाक द्वीप में था। वह डर ही रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि ये पक्षी फिर उसे समुद्र में धकेल दें कि उसे पास ही एक झोंपड़ी दिखाई दी। वह उसमें जाकर बैठ गया। पर इतने में पृथ्वी काँप उठी। थोड़ी दूरी पर धूल उठी। वह धूलों का बादल जहाँ वह था, उसी तरफ़ आ रहा था। जल्दी ही उसको उस बादल में बिजलियों की तरह भाले, कवच, शिरस्त्राण आदि, दिखाई दिये।" शायद वे आनेवाली योद्धा कन्यायें हैं।

वे बड़े बड़े घोड़ों पर सवार होकर तलवारें लेकर, वायुवेग से उसकी ओर आ रही थीं। हसन उनसे बचकर नहीं जा

सकता था। वह झोंपड़ी के दरवाजे के पास खड़ा हो गया। उसके देखते ही, घोड़े खड़े हो गये। योद्धा कन्याओं में से एक अपना घोड़ा चलाती हसन के पास आई। क्यों कि उसके मुँह पर भी कवच था, इसलिये वह उसका मुँह न देख सका। उसके कुछ कहने से पहिले ही हसन ने भूमि पर साष्टांग करके कहा—"देवी, मैं विधिवश इस द्वीप में आया हूँ। तुम्हारे शरण में आया हूँ। मैं अपने बच्चों और पत्नी को ढूँढ़ता ढूँढ़ता यहाँ पहुँचा हूँ। मुझ अभागे को अभय दीजिये।"

वह अपने घोड़े पर से उतरी, हाथ के इशारे से अपने अनुचरों को भेजकर, उसकी ओर ध्यान से देखता अपने मुँह का अग्रभाग हटा दिया। उसका मुँह देखकर, डरकर, हसन ज़ोर से चिल्लाया। यह प्रसिद्धि थी कि योद्धा कन्यायें बहुत सुन्दर थीं। यह बूढ़ी तो थी ही, इसके अलावा वह बहुत भयंकर भी थी।

यह सोचकर कि हसन ने भय के कारण आँखें नहीं मूँदी थीं पर आदर के कारण मूँदी थीं। उस बूढ़ी ने कहा—"डरो मत। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी। जो तुम सहायता चाहोगे वह मैं करूँगी। पर पहिले मुझे कुछ ऐसा करना होगा कि तुम्हें कोई देखे न। इसलिये तुम्हें योद्धा कन्याओं के वस्त्र लाकर देती हूँ। फिर तुम्हारी कहानी सुनूँगी।"

वह गई और जल्दी ही योद्धा कन्याओं के कवच हथियार आदि लेकर आई। उन सब के पहिनने पर हसन भी योद्धा कन्या-सा लगने लगा। बुढ़िया ने उसे समुद्र तट के एक पत्थर पर बिठाया। वह स्वयं भी बैठी और उसकी सारी कहानी ध्यान से सुनी। फिर उसने उसकी पत्नी और
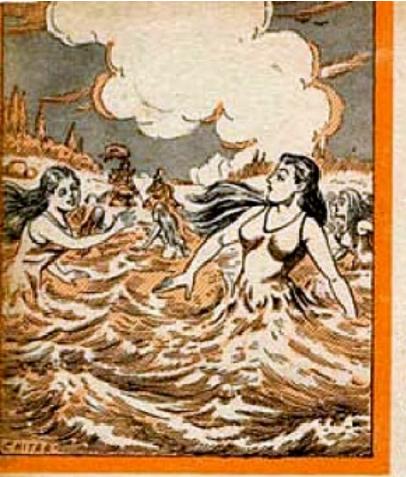
पुत्रों का नाम पूछा। उसने उनके नाम बताकर कहा—"ये हमारे दिये हुये नाम हैं, मैं नहीं जानता कि उनको यहाँ किस नाम से बुलाया जाता है।"

बुढ़िया को हसन पर मातृ प्रेम उमड़ आया। उसने हसन से कहा—"हसन जो कुछ मैं अपने लड़के के लिए करूँगी वह तुम्हारे लिये भी करूँगी। तुम्हारी पत्नी, शायद इन योद्धा कन्याओं में से एक है। जब वे कल यहाँ नहाने आयेंगी तब तुम अपनी पत्नी को चुन लेना। इसतरह यह काम आसानी से हो जायेगा।"

जैसा उसने कहा था, अगले दिन योद्धा कन्यायें बिना कवच शिरस्त्राण के समुद्र में स्नान करने आईं। हसन ने वेष बदल ही रखा था। उसने उन सबको देखा, पर उनमें उसकी पत्नी न थी।

सब के स्नान करने के बाद, हसन ने जब यह बुढ़िया को बताया, तो बुढ़िया ने चकित होकर कहा—"हसन, अब बस, हमारे सम्राट की सात लड़कियाँ ही बाकी रह गई हैं। यदि उनमें से कोई तेरी पत्नी है, तो मैं और तुम—दोनों को ही निराश होना पड़ेगा। बेटा, तुम अपनी पत्नी को नहीं खोज रहे हो, बल्कि अपनी मौत को खोज रहे हो। अब भी मान जाओ चले जाओ।"

"माँ, अब इतनी दूर आकर क्या पीछे जाऊँ! तुम्हारी मदद पर ही निर्भर हूँ। जब ये सात द्वीप तुम्हारे द्वारा रक्षित हैं, तब तुम्हारे लिए असम्भव क्या है?" हसन ने कहा।

"मेरा अधिकार केवल इन द्वीपों की रक्षा करनेवाली योद्धा कन्याओं पर ही है। उनमें से जिसे तुम चाहो माँगो, मैं दे दूँगी। उसे तुम अपने नगर ले जाकर,

आराम से रहो। यदि तुम यह नहीं चाहते, तो हम दोनों पर आपत्ति आकर रहेगी।" बुढ़िया ने कहा।

हसन ज़ोर से रोने लगा। उसका दुख देखकर, घबराकर बुढ़िया ने पूछा—"बताओ, मुझे क्या करने के लिए कहते हो! मेरे प्राण तो केवल इसी बात पर ही ले लिए जायेंगे कि मैंने तुम्हें इस द्वीप में आने दिया। यदि पत्नी न मिली तो न मिली, मैं तुम्हें विपुल धनराशी दूँगी, ले जाओ। जब तक जीवित रहो बादशाह की तरह ऐश करो।"

हसन ने उसके पैर पकड़कर कहा—"मुझे अपने प्रयत्न में सफल होना है। क्योंकि भाग्य मेरे साथ है, इसलिए इतनी विपत्तियों को झेलता यहाँ तक आया हूँ। इस हालत में प्रयत्न छोड़ने से से तो अच्छा यही है कि मैं मर जाऊँ।"

हसन की जिद बुढ़िया जान गई। "जो हुआ, सो हुआ। ज़रूरत हुई, तो तुम्हारे साथ मैं भी मर जाऊँगी और कोई रास्ता नहीं है। सातों वाक वाक द्वीप, सम्राट की सात लड़कियों के आधीन हैं। यह बड़ी लड़की का द्वीप है। उसका नाम नूरल्हादा है। यह सब उनको बताकर, उनको मनाकर, अभी आती हूँ।" कहकर बुढ़िया चली गई।
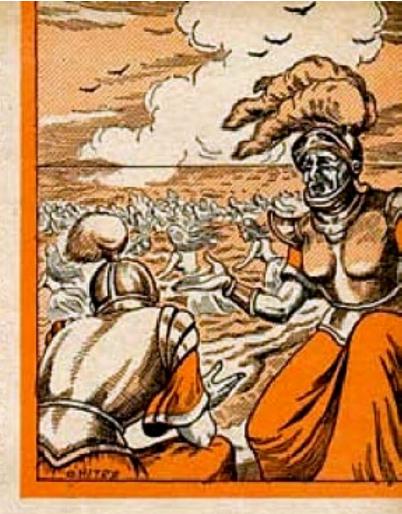
नूरल्हादा बुढ़िया को देखते ही आदरपूर्वक खड़ी हुई और आसन दिखाकर बैठने के लिए ईशारा करते हुए पूछा—"क्यों, कोई मेरे लिए अच्छी खबर लायी हो! या कुछ माँगने के लिए आयी हो! माँगो, दे दूँगी।"

"महारानी, मेरी बिटिया। आज एक विचित्र घटना हुई। वह सुनकर, तुम इतनी हँसोगी कि पेट फूल जायेगा। न

मालूम कैसे एक युवक, हमारे समुद्र तट पर आ पहुँचा। जब वह रोता हुआ, मेरी नज़रों में आया, तो मैंने उससे बात पूछी। उसने कहा कि भाग्य उसको यहाँ लाया है और वह अपनी पत्नी और बच्चों को खोज रहा है। उसने अपनी पत्नी का वर्णन किया। वह वर्णन तुम्हारा ही है—या तेरी बहिनों में कोई होगी। वह होने को मनुष्य है, पर बड़ा सुन्दर है।"

नूरल्हादा जब आगबबूला हो उठी—"बूढ़ी, दुष्ट कहीं की। हमारे द्वीप पर आदमी को कैसे आने दिया! तुम्हारा खून पी जाऊँगी। तुम्हारा माँस खा जाऊँगी। तुम्हें मारने से पहिले मैं उस आदमी को एक बार देखूँगी। उसे लाओ।"

"इस लड़के के कारण, तो मेरे प्राणों पर आ पड़ी है।" बुढ़िया ने गुनगुनाते, काँपते काँपते हसन के पास आकर कहा—"अरे मुरदे! चल, रानी तुम्हें देखना चाहती है।" "न मालूम मेरे भाग्य में क्या लिखा है!" कहता हसन उसके साथ चल पड़ा।

जब वे पहुँचे, तो नूरल्हादा ने हल्का परदा कर रखा था। हसन ने उसको

प्रणाम किया। उसके स्वागत में, उसने कुछ गीत भी गाये। सम्राट की लड़की ने सब कुछ सुनकर, बुढ़िया की ओर इस तरह देखा, जैसे वह कुछ पूछ रही हो। बुढ़िया ने हसन की ओर मुड़कर कहा—"महारानी जानना चाहती है, तुम्हारी पत्नी और बच्चों का नाम क्या है?"

हसन ने सम्राट की लड़की की ओर मुड़कर कहा—"महारानी, मैं हसन नाम का अभागा हूँ। मैं ईराक देश के बसरा शहर का हूँ। मैं अपनी पत्नी का नाम नहीं जानता। हमारे लड़कों का नाम नासिर और मन्सूर हैं।"

जब हसन से पूछा गया कि उसकी पत्नी क्यों छोड़ गई थी, तो उसने कहा कि मैं नहीं जानता हूँ। उसने साथ यह भी कहा कि उसने अपनी इच्छानुसार मुझे नहीं छोड़ा है। वह बगदाद के खलीफ़ा के महल से गई थी, उड़ने के लिए उसने पक्षियों के चोगे का उपयोग किया था। जाते जाते उसने मेरी माँ से कहा था कि वह वाक वाक द्वीप रहेगी। उसने मुझे खोजने के लिए भी कहा था। हसन

ने सम्राट की बड़ी लड़की से कहा। तब तक नूरल्हादा चुप थी, पर यह सुनकर उसने कहा—"यदि तुम्हारी पत्नी को तुम पर प्रेम न होता, तो वह न बताती कि वह कहाँ रहती है। यदि तुम पर प्रेम था, तो तुम्हें छोड़कर जाती ही न।"

हसन ने प्रमाणपूर्वक कहा कि यह दिखाने के लिए कि उसको मुझ पर प्रेम था, कितने ही उदाहरण हैं। उसकी उड़ने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि वह उड़े बगैर न रह सकी। सब कहने के बाद उसने उससे प्रार्थना की कि वह उसकी सहायता करे और वाक वाक द्वीप में आने का उसका दुस्साहस क्षमा करे।

बुढ़िया को भी हौसला हुआ। उसने भी बुढ़िया के पैर पर पड़कर कहा—"महारानी, मैंने पाल-पोसकर तुम्हें बड़ा किया है, ज़रा मेरी बात सुनो। इस अभागे को दण्ड मत दो। यह भगवान की कृपा से ही यहाँ पहुँचा है। इसके कष्ट खतम हो चुके हैं। हमें इसे अतिथि के रूप में देखना चाहिए। इसने जो कुछ गलतियाँ की हैं, पत्नी पर प्रेम के कारण ही हैं। इसलिए माफ़ किया जा सकता है। यही नहीं यह अच्छी आशु कविता भी करता है। यदि तुमने अपना परदा हटाया, तो वह बढ़िया कविता बनाकर सुना देगा।"

हसन कैसी कविता सुनायेगा, यह जानने की उत्सुकता नूरल्हादा को भी हुई। उसने अपने मुँह का परदा हटा दिया। हसन उसके मुँह को देखते ही ज़ोर से चिल्लाकर मूर्छित हो गिर गया।

[अगले अंक में समाप्त]

चुगलखोर और नारियल

सामने के घरवाला लड़का, चुगली करके, गली में रहनेवाले लड़कों को बड़ों से पिटवाने लगा। जब बाबा को यह मालूम हुआ, तो उसको बड़ा गुस्सा आया।

"बच्चे चाहे कुछ भी करें, मैं बर्दाश्त कर सकता हूँ। पर इस तरह के झगड़े पैदा करना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। तुम इस तरह के गन्दे काम न किया करो।" बाबा ने बच्चों को समझाया।

"बाबा तुम्हें भी गुस्सा आ गया है।" उन्होंने कहा।

"गुस्सा क्यों नहीं आयेगा? कहते हैं जो बुद्धि जन्म के साथ आती है, वह मौत के साथ ही जाती है। यह झगड़ालूपन मौत के साथ भी नहीं जायेगा। तुम्हें नारियल की कहानी सुनाई थी न!" बाबा ने कहा।

"नहीं, सुनाई थी बाबा! तुम्हारी कहानियों में कहीं नारियल का नाम ही नहीं आया।" बच्चों ने शोर किया।

ऐसा लगा, जैसे कि बाबा का गुस्सा काफूर हो गया हो, उसने सुँघनी निकालकर मुस्कराकर कहा—"तो अब सुनाता हूँ, सुनो।" उसने यों सुनाना शुरु किया।

कई साल पहिले, बर्मा देश के समुद्र तट पर एक तमेड़ बहती बहती लगी। उस पर दो आदमी और एक स्त्री थी। उनको, वहाँ के लोग राजा के पास ले गये। राजा ने उनसे पूछा—"तुम कौन हो? कौन देश है तुम्हारा? क्यों इसतरह तमेड़ पर आये हो?" उन्होंने कहा कि वे अपराधी थे और वे समुद्र के परे के देश
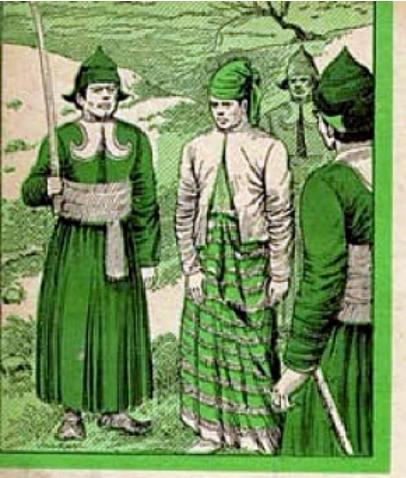
के रहनेवाले थे। उनके राजा ने दन्ड के रूप में, उनको तमेड़ पर बिठाकर समुद्र में छोड़ दिया था।

जब पूछा गया कि उनके क्या अपराध थे, एक चोर था, स्त्री, जादू टोना जानती थी और तीसरे ने चुगली करके, लोगों को एक दूसरे के विरुद्ध बहकाया था।

सब अपराध जानने के बाद, मालूम है, बर्मा देश के राजा ने क्या किया? चोर को उसने एक घर और हज़ार चान्दी के सिक्के देकर कहा—"तुमने गरीबी के कारण चोरी की। इसलिए तुम्हारी गरीबी दूर करने के लिए पैसा दे रहा हूँ। सुख से जीओ, और सम्भलकर रहो।"

राजा ने जादू टोना करने वाली स्त्री को भी घर और सम्पत्ति दी।—"क्योंकि तुम गरीब थी, दूसरों का सुख इसलिए सह न सकी और सब पर मन्त्र लगाकर उनको सताया। क्यों कि अब तुम्हें कोई कमी न रहेगी इसलिए तुम सम्भल कर रहो।"

फिर राजा ने चुगलखोर को देखकर कहा—"क्यों कि चुगली करके झगड़े पैदा करना ही इसका काम है इसलिए इसे कितनी भी सुविधायें दी जायें, इसकी आदत नहीं जायेगी। इसलिए तुरत इसे ले जाकर, इसका सिर काटदो।" सिपाहियों ने उसको ले जाकर उसका सिर काट दिया।

पर अगले दिन एक राजकर्मचारी, उस तरफ से जा रहा था कि चुगलखोर का सिर देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्यों? चूँकि वह ज़मीन पर इधर उधर लुढ़क रहा था। राजकर्मचारी को देखकर उसने कहा—"तुम जाकर अपने राजा को बुलाओ। यदि उसने आकर मेरे सामने

साष्टाङ्ग न किया तो उसका सिर काट दूँगा।"

राजकर्मचारी घबराया। वह भागा भागा राजमहल गया। जो कुछ उसने देखा सुना था, उसे राजा को बताया। राजा को उसकी बात पर विश्वास न हुआ। कैसे विश्वास करता? यही नहीं, उसको कर्मचारी पर गुस्सा भी आया।

राजकर्मचारी ने राजा के क्रोध को देखकर कहा—"यदि आपको मेरी बात पर विश्वास न हो, तो मेरे साथ एक आदमी भेजिये। आपको भी गवाही मिल जायेगी।"

अच्छा, ऐसा ही सही। राजा ने उस कर्मचारी के साथ एक और कर्मचारी भेजा। दोनों मिलकर वहाँ गये, जहाँ चुगलखोर का सिर पड़ा हुआ था। वह न हिला, न डुला।

जो गवाही लेने गया था, उस कर्मचारी ने कहा—"उस सिर में प्राण ही नहीं हैं।"

"काटे हुए सिर में प्राण कैसे होंगे! इस दुष्टने मेरा अपमान करने के लिए उस सिर का बहाना करके, तरह-तरह की बातें कहीं। इसका भी सिर काट दो।" राजा ने कहा।

तब क्या था—पहिले कार्मचारी का भी सिर काट दिया गया। तुरत चुगलखोर के सिर ने कहा—"हाँ, हाँ, सोचा था कि सिर काट दिया गया, तो मैं चुगलखोरी नहीं करूँगा।"

राजकर्मचारी को अकारण शिरच्छेद का दण्ड मिला। चुगलखोर ने मरकर भी अपनी आदत न छोड़ी। जो कुछ गुज़रा था, उस पर राजा पछताया। उसने कहा—"उस चुगलखोर के सिर को यूँही रहने देना अच्छा नहीं है। उसको कहीं तुरत गड़वा दो।"

चुगलखोर का सिर गाड़ दिया गया। अगले दिन वहाँ विचित्र पेड़ उपजा। वह ही नारियल का पेड़ था। तब तक बर्मावाले नारियल का पेड़ नहीं जानते थे। इसलिए उन्होंने उस पेड़ का नाम गोंबविन रखा। गोंबविन का अर्थ चुगलखोर वृक्ष है। अब वह अपभ्रंश रूप में ओनविन हो गया है।

बाबा ने यह कहानी सुनाकर कहा—"जानते हो, क्यों हम नारियल के तोड़ने तक उसकी चोटी नहीं हटाते? क्योंकि उस चोटी के नीचे दो आँखें और एक मुख होता है। यदि हमने चोटी काट दी, तो वह हम में झगड़े पैदा कर सकता है। इसलिए नारियल को तोड़ने तक उसकी चोटी नहीं हटानी चाहिए।"

"यह नहीं बाबा, चोटी हो, तो नारियल आसानी से तोड़ा जा सकता है। इसलिए चोटी नहीं हटाते।" छोटे ने कहा।

"जा बे जा, क्या तुम मुझ से अधिक जानते हो?" बाबा ने यूँही गुस्सा दिखाया और छोटा ज़ोर से हँसता भाग गया।

किष्किन्धा काण्ड
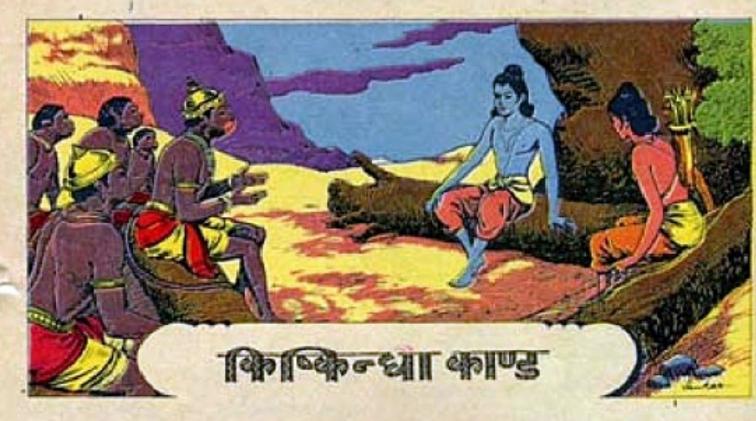
जो कुछ गुजरा था, राम ने उस पर खेद प्रकट करते हुए कहा—"सुग्रीव, मुझ पर गुस्सा न करो। तुम दोनों एक ही तरह थे। तुम दोनों का स्वर भी एक सा ही था। मैं तुम्हें ठीक तरह न पहिचान सका, इसलिए मैंने बाण नहीं छोड़ा। मेरे कारण तुम पर आपत्ति आई, मुझे क्षमा करो। यदि तुमने कोई निशान लगाकर वाली से युद्ध किया, तो मैं उसे बाण से मार दूँगा। मेरी बात पर विश्वास करो।"

पहाड़ के छोर पर गजपुष्पी नाम की बेल पर फूल खिले हुए थे। लक्ष्मण ने उनकी माला बनाकर, सुग्रीव के गले में डाली। फिर वे किष्किन्धा की ओर चल पड़े।

सुग्रीव के साथ नल, नील और तार भी थे। किष्किन्धा के रास्ते में राम को घने पेड़ों का एक झुरमुट दिखाई दिया। राम ने उसके बारे में सुग्रीव से जाना, वह एक ऋषि का आश्रम था। सप्त जन नामक सात ऋषियों ने उस आश्रम में कठिन तपस्या की। पानी में सिर के बल खड़े होकर, वायु भक्षण करते, तपस्या करके वे सशरीर स्वर्ग चले गये। उस आश्रम में मनुष्य तो क्या, पशु पक्षी भी नहीं जा
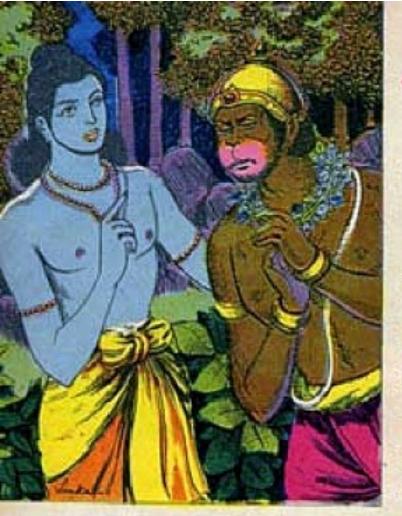
सकते थे। यदि अनजाने चले भी जाते, तो बाहर न आ पाते।

राम और लक्ष्मण सप्त जनों का स्मरण करके, आश्रम को नमस्कार करके आगे बढ़ गये। बहुत दूर जाने के बाद वे किष्किन्धा पहुँचे। सुग्रीव ने राम से कहा—"तुमने वचन दिया था कि वाली को मारोगे। वह काम जल्दी ही करना होगा।"

"इस बार वाली को एक ही बाण से मार दूँगा। गले में माला है ही। इसलिए तुम न डरो। वाली को युद्ध के लिए ललकारो।" राम ने कहा।

पास के घने जंगल में सब छुप गये। सुग्रीव ने भयंकर गर्जन करके वाली को युद्ध के लिए बुलाया।

यह गर्जन सुनते ही वाली को बड़ा गुस्सा आया। वह युद्ध के लिए निकल पड़ा। यह देख, तारा ने झट उठकर वाली को पकड़कर कहा—"इस रात के समय तुम जाकर सुग्रीव से युद्ध न करो। चाहो, तो कल सवेरे जाना। इस बीच न तुम्हारा बल घटेगा, न सुग्रीव का बढ़ेगा ही, इतने में जल्दी ही क्या है! थोड़ा सोचो। मैं निष्कारण तुम्हें नहीं रोक रही हूँ। एक बार जो तुम से इतनी मार खाकर भाग गया था, वह किस हिम्मत से तुम्हें बुला रहा है! किसी के सहारे पर ही वह तुम्हें उकसा रहा है। वह कौन है, यह भी मैं जानती हूँ। अयोध्या के राजा के लड़के राम, लक्ष्मण ने आकर, सुना है सुग्रीव से ऋष्यमूक पर मैत्री की है। उन्होंने पहिले ही विराध, खर दूषण, कबन्ध आदि को मार दिया है। बड़े पराक्रमी हैं। उनके बारे में अंगद को गुप्तचर ने बताया है। सुग्रीव बड़ा होशियार है। वह यूँही किसी का विश्वास

नहीं करता। राम के बल पर ही वह फिर आया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। तुम्हारे भले की एक और बात बताती हूँ। यह जान लो कि अब सुग्रीव तुमसे अधिक बलवान है। उसे बुलाकर, उसको युवराज नियुक्त करो। तुम्हारा भाई ही तो है, उसे किष्किन्धा में रहने दो। तुम्हें भी राम की मैत्री मिल सकेगी। सुग्रीव से यदि विरोध है, तो राम से भी विरोध है। राम से युद्ध करना तुम्हारे लिए लाभप्रद नहीं है।"

तारा की ये बातें वाली को बिल्कुल न जँचीं। उसने कहा—"तारा, तुमने मेरे भले की ही बात कही है। पर तुम कायर की बातें सुनकर, मैं सुग्रीव की धूर्तता हाथ पर हाथ रखे न देख सकूँगा! मैं बड़े-बड़े बल्वानों के सामने ही न घबराया, क्या सुग्रीव के सामने घबराऊँगा! राम मुझे क्यों मारेगा! मैंने उसका क्या बिगाड़ा है! क्या सुग्रीव को भी मैं मारूँगा! उसकी खूब मरम्मत करके आ जाऊँगा। तुम और स्त्रियाँ मेरे पीछे न आओ।" वाली ने कहा।
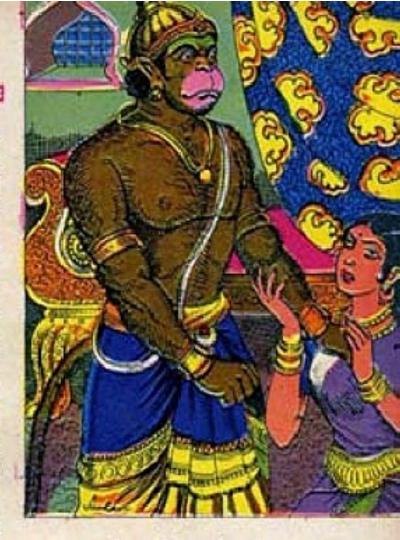
स्त्रियाँ चली गईं। यह सोच कि वे डर जायेंगी, उसने अपना गुस्सा छुपाये रखा। उनके पीछे हटते ही वाली ने भयंकर आकृति बना ली। किष्किन्धा नगर के द्वार पार करके, कमर कसकर प्रतीक्षा करते सुग्रीव की ओर उसने देखा। तुरत वाली ने भी कमर कसी। "तेरे प्राण निकाल दूँगा।" कहकर, वाली ने सुग्रीव को मुक्का मारा। दोनों ने पेड़ उखाड़कर एक दूसरे पर फेंके। वाली थक गया था, पर सुग्रीव और भी अधिक थक गया था।

सुग्रीव की हालत देखकर राम ने काल सर्प-सा बाण चुना, उसको धनुष पर चढ़ा
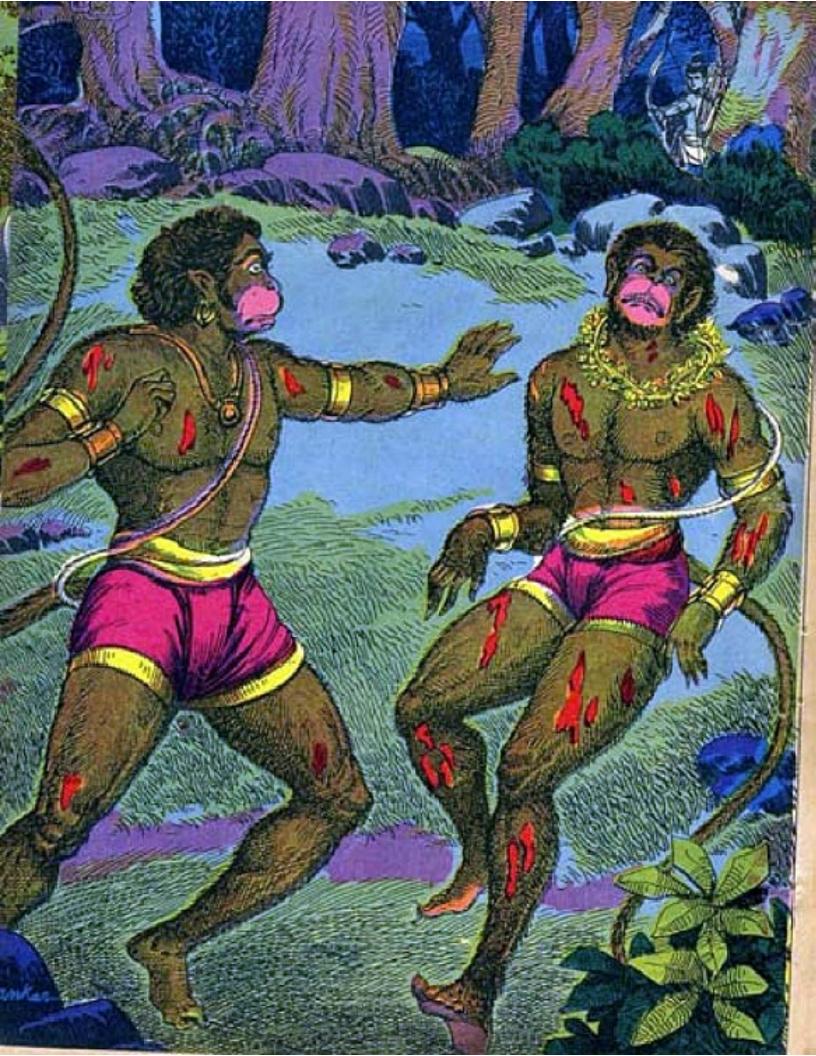
कर, कान तक खींचकर वाली की छाती पर निशाना लगाकर छोड़ा। वाली बाण लगते ही नीचे गिर गया। वाली को, जिसने अनेक सुवर्णाभरण पहिन रखे थे, इन्द्र की दी हुई कांचन मालिका पहिन रखी थी, देखने राम लक्ष्मण गये।

वाली ने धीमे से आँखें खोलीं, राम को देखकर कहा—"तुम महाराजा के लड़के हो। बड़े वंश में पैदा हुए हो। धर्म पर आचरण करनेवाले हो। मैं जब किसी और से युद्ध कर रहा था, तो तुम्हारा मुझ पर बाण मारना कितना उचित है? तारा ने मुझे युद्ध के लिए न जाने के लिए कहा था। पर तुम्हारे वंश के बारे में सोचकर, गुणों पर विश्वास करके, मैं इस ख्याल में आया था कि तुम मेरा कुछ न बिगाड़ोगे। मैं तुम्हारे देश में नहीं आया। मैंने तुम्हारा कोई अपकार नहीं किया। मैंने युद्ध के लिए भी नहीं ललकारा। मैं केवल वानर हूँ और फिर मैं किसी और से लड़ रहा था, तुमने मेरी क्यों हत्या की? तुम दुष्ट हो। धनुष बाण लेकर घूमनेवाले हत्यारे हो। तुम धर्म किसको कहते हैं, नहीं जानते। यदि तुम मुझे जन्तु समझ कर, मेरा शिकार करना चाहते थे, तो मेरा चर्म पहिनने के काम भी नहीं आ सकता। न मेरे बालों का उपयोग है, न हड्डियों का ही। मेरा माँस भी नहीं खाया जा सकता। यदि तुम सचमुच पराक्रमी हो, तो क्यों नहीं रावण आदि को मारते? यदि तुम मेरे सामने आकर युद्ध करते, तो अब तक यम के पास तुम्हें पहुँचा देता! यदि तुम मुझसे ही कहते, तो मैं तुम्हारी सीता को एक दिन में खोजकर ले आता। इसलिए ही तो तुमने सुग्रीव की मदद करके मुझे मारा है।" उसने पूछा।
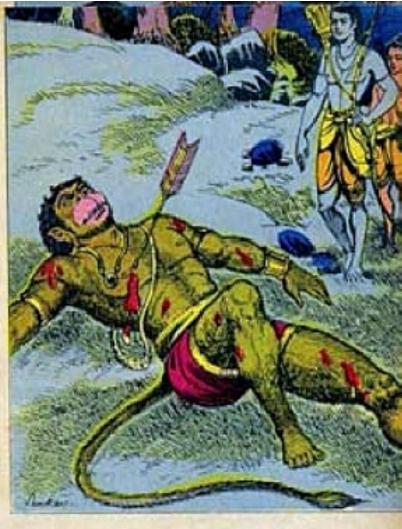
इसका दण्ड मरण ही है। यदि तुम्हें दण्ड नहीं देता, तो मैं अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रहा होता। यही नहीं, जो मैत्री हमने सुग्रीव से की है, वह हमारे लिए बन्धुत्व की तरह है। मैंने पत्नी के लिए और उसने राज्य के लिए यह मैत्री की है। मैंने वानरों के सामने प्रतिज्ञा की है कि मैं तुमको मारूँगा। इसलिए तुम्हें मारने में मैंने कुछ भी अधर्म नहीं किया है। चूँकि तुमने कुछ मानव धर्म का आचरण किया है, इसलिए ही मैंने यूँ कहा। यदि तुमको मैं केवल वानर ही समझता, तो तुम्हारा शिकार मैं कभी भी कर सकता था। अभक्ष्य पशुओं का भी शिकार किया जाता है। तुम बन्दर हो, इसलिए मेरे लिए यह आवश्यक नहीं है कि मैं तुम से युद्ध करके ही तुम को मारूँ। ऐसा कोई नियम भी नहीं है।"
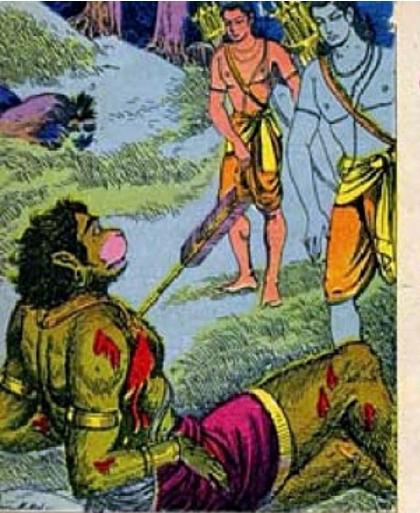
वाली की इन बातों का राम ने यों उत्तर दिया—"तुम धर्म, अर्थ और काम के बारे में नहीं जानते। समस्त संसार के ईक्ष्वाकु राजा हैं। संसार में जहाँ कहीं अधर्म हो, उसके लिए दण्ड देना, ईक्ष्वाकु राजाओं का उत्तरदायित्व है। इस समय भरत सारी भूमि का राजा है। हम जैसे क्षत्रिय उसकी आज्ञा पर अधर्म का दमन कर रहे हैं। वानर हो, वानरों के साथ रहते हो, इसलिए धर्म की सूक्ष्मता नहीं जानते। तुमने अपने भाई की पत्नी का अपहरण किया। यह बड़ा पाप है।

राम की बात सुनकर, वाली को पश्चात्ताप हुआ कि उसने राम की निन्दा की थी, उसने राम से कहा—"मुझे इसका खेद नहीं है कि मैं मर रहा हूँ। तुम्हारे हाथ मरने के लिए ही तारा के रोकने पर भी मैं इस द्वन्द्व युद्ध के लिए आया।

मेरा एक लड़का अंगद है। मैं उसी के बारे में चिन्तित हूँ। यह देखो कि सुग्रीव [illegible] सुग्रीव को, हो सकता है, मेरी पत्नी तारा पर क्रोध हो। यह देखना कि वह उसका अपमान न करे।" यह कहकर, वह बेहोश हो गया।

तारा को मालूम हो गया था कि वाली को राम का बाण लगा था। वह रोती, अपने लड़के के साथ किष्किन्धा से आयी। राम के बाण से घायल वाली को देखकर, डरकर वाली के कुछ अनुचर जो भागे जा रहे थे, तारा को दिखाई दिये। उन्होंने तारा से कहा—"आपका लड़का अभी जीवित है, उसकी रक्षा के लिए पीछे चले जाइये। मृत्यु राम के रूप में आयी और वाली को ले जा रही है। अंगद का पट्टाभिषेक करना है, किष्किन्धा का द्वार बन्द करके, उसकी रक्षा करनी है। यदि आप यह नहीं करना चाहते, तो आप किष्किन्धा को छोड़कर भाग जाइये।"

"जब उतना बड़ा पति ही जा रहा है, तो क्या यह राज्य, यह शरीर, यह लड़का, मेरे साथ रहेंगे! मैं अपने पति के चरणों के पास ही जाऊँगा।" वह ज़ोर से रोती वाली के पास गई। वह राम लक्ष्मण को और सुग्रीव को पार करके वाली के पास गई। उसको बेहोश देख, यह सोच कि वह मर गया था, वह भी मूर्छित हो गई। होश आने पर वह अपने पति का आलिंगन करके ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।
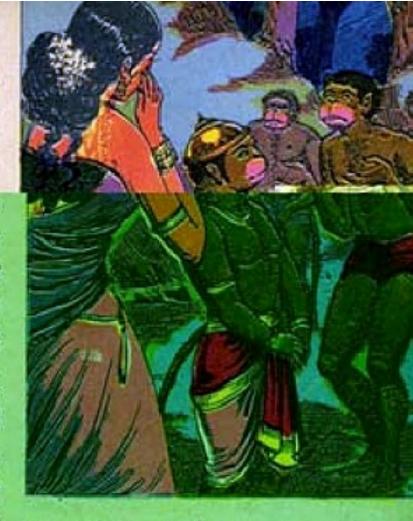
वाली के समीप हनुमान ने तारा को आश्वासन देना चाहा। इतने में वाली ने आँखें खोलकर, सामने खड़े सुग्रीव को देखकर कहा—"सुग्रीव, हमारे भाग्य में यह न था कि हम दोनों भाई के तौर पर इस राज्य का आनन्द लेते। इसीलिए मैंने

तुम्हें भगा दिया था, तुम गुस्सा न रखना कि मैंने तुम्हारे पत्नी का अपहरण किया था। मैं अपने लड़के अंगद को तुम्हें सौंप रहा हूँ। जैसा मैंने उसे देखा था, तुम भी देखो। अब तुम ही वानर राज्य का पालन करो। मेरे प्राण निकलने से पहिले इस कांचन मालिका को ले लो।" फिर उसने अंगद से कहा—"बेटा, अब से जो तुम्हारा चाचा कहे, करो। उसके शत्रुओं का या उनके मित्रों का साथ न देना।" यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिये। सब वानर एक साथ रोये। तारा अपने पति की लाश पर गिरकर मूर्छित हो गई।

फिर नील ने वाली के छाती पर लगे राम के बाण को निकाल दिया। अंगद ने पिता के चरणों को नमस्कार किया। सुग्रीव ने आँसू बहाते हुए राम के पास आकर कहा—"राम, तुमने वचन के अनुसार वाली को तो मार दिया है। पर मुझे अब भोग विलास और जीवन पर ही वैराग्य हो गया है। जब यह तारा, किष्किन्धा के वानर और अंगद दुख के समुद्र में हों, तो मैं कैसे राज्य कर सकता हूँ! वाली ने जो कष्ट मुझे दिये थे, उसके कारण ही मैंने उसकी मौत चाही थी। अब मुझे पश्चाताप सता रहा है। वह बड़ा बुद्धिमान है। उसने कभी मुझे मारने का प्रयत्न न किया था। उसको मारने की इच्छा मुझ पापी में ही पैदा हुई। मैं भी वाली के साथ ही चला जाऊँगा। मेरे न होने से तुम्हें कोई कमी न होगी! सब वानर सीता का अन्वेषण करेंगे।"

१९. काबा

इस्लाम मतावलम्बियों के लिए संसार में सब से अधिक पवित्र स्थल मक्का है। इस्लाम के संस्थापक मोहम्मद का यहीं जन्म हुआ था। दूसरे धर्म के अवलम्बी मक्का में पैर भी नहीं रख सकते।

मक्का के मस्जिद के आँगन में काबा (चित्र में काला) है। यह मोहम्मद से पहिले से है। यह मुस्लिमों के पुरानी मस्जिदों में से है। इस में एक भी खिड़की नहीं है। एक ही द्वार है। यह जमीन से सात फीट ऊँचा है। द्वार पर काला परदा लगा रहता है। यह जरी से बनाया जाता है। इसे "किस्वा" कहा जाता है। प्रति वर्ष इस "किस्वा" को बदला जाता है। मिस्र से जानेवाले यात्रियों के साथ वहाँ की सरकार काबा के लिए नया "किस्वा" भेजती है।

काबा के एक कोने में "काला पत्थर" भक्तों के छूने के लिए उचित ऊँचाई पर रखा हुआ है। इस पत्थर को, गेब्रीयल नामक देवदूत ने अब्राहम को दिया था।
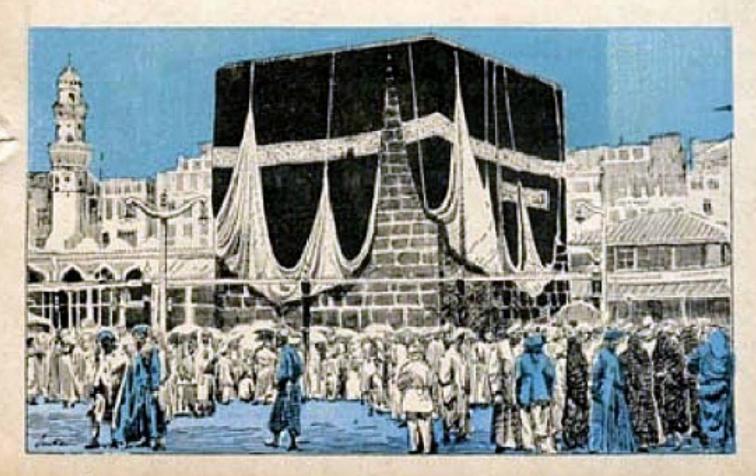
१. रमेशकुमार सोनी, पेंड्रा रोड

क्या आप "प्रश्नोत्तर" स्तम्भ की पृष्ठ संख्या नहीं बढ़ा सकते?

नहीं, अभी तो कोई विचार नहीं है।

२. गिरीशचन्द्र सुमन, अलीगढ़

"पत्र मैत्री" स्तम्भ आप कब से शुरु कर रहे हैं?

फिलहाल कोई इरादा नहीं है।

३. काशीनाथ दूबे, ममूराबाद

आप "महाभारत" नामक कथा को छोटे अक्षरों में क्यों छापते हैं?

महाभारत बहुत बड़ी है और वह प्रसिद्ध भी है। इसलिए बहुत-सी कहानी, हम एक ही पृष्ठ में समाने की कोशिश करते हैं।

४. सन्दीप ढंड, लुधियाना

पंजाब आदि स्थानों पर केवल हिन्दी की ही चन्दामामा मिलती है। अंग्रेजी की चन्दामामा के लिए क्या हम आपको धन भेजें?

हम अंग्रेजी में "चन्दामामा" अब प्रकाशित नहीं करते।

५. मुरारीलाल, मुरैना

फ़ोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता के लिए, प्राप्त पत्रों की जाँच, आप आखिरी तारीख के बाद करते हैं, अथवा उसके पहिले ही?

आखिरी तारीख के बाद।

६. अजयकुमार, राजनोद गाँव

आप "दीपावली" की तरह "क्रिस्मस" विशेषांक क्यों नहीं निकालते ?

आजकल की संकटकालीन परिस्थितियों में यही काफी है कि हम कम से कम एक विशेषांक दे पा रहे हैं।

७. भूपेन्द्र चन्द्र सूद, भोपाल

आप "चन्दामामा" को पाक्षिक पत्रिका नहीं कर सकते ?

काश, कर पाते।

८. हेमेन्द्रकुमार चतुर्वेदी, आगरा

क्या "धूमकेतु" और "भयंकर देश" पुस्तकाकार में प्रकाशित हो गई हैं ?

नहीं।

९. शान्ति प्रकाश खेतान, झुँझन

क्या आप "चन्दामामा" को उर्दू में छापने का प्रयत्न कर रहे हैं, यदि नहीं, तो क्यों ?

नहीं तो, क्योंकि हमारे पास आवश्यक सुविधायें नहीं हैं।

१०. उपेन्द्रकुमार गुप्ता, गया

क्या आप शेक्सपीयर की प्रसिद्ध कृति "दि मर्चेंट आव वेनिस" व "दि मिडसमर नाइट्स ड्रीम" छाप सकते हैं ?

छाप चुके हैं।

११. शशिकान्त शर्मा, चन्दौसी

चन्दामामा में फ़ोटो परिचयोक्ति कितने वर्षों से निकलती है ?

करीब पिछले बारह वर्षों से।

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत परिचयोक्ति

आया सावन झूला झूलें !

प्रेषक : कृष्णकुमार भट्ट - जयपुर

Photo by B. Bhansali

पुरस्कृत परिचयोक्ति

तुम भी खेलो, हम भी खेलें !!

प्रेषक : कृष्णकुमार भट्ट - जयपुर